राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

राजभाषा स्मारिका

हिन्दी पखवाड़ा 14–28 सितम्बर 2018

ग्रामीण विकास मंत्रालय

भारत सरकार

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

विषय सूची

क्र.स.	रचना	रचयिता / संकलनकर्ता		पृष्ठ सं.
1.	प्यार की भाषा हिन्दी	श्रीमती शांति प्रिया सरेला	निदेशक	1
2.	मूल्य	श्री कैलाश कुमार बिष्ट	उप निदेशक	2
3.	इन्टरनेट (कविता)	श्री सत्यदेव सिंह	परामर्शदाता	4
4.	भाई (कविता)	श्री एच.एस.सैनी	परामर्शदाता	5
5.	मेरे जज्बात	श्रीमती शांति प्रिया सरेला	निदेशक	6
6.	एक प्राचीन कथा	श्री एच.एस.सैनी	परामर्शदाता	7
7.	मैनेजमेंट फंडा	श्री विजय इंग्ले	प्रोग्रामर	9
8.	ग्लोबल वार्मिंग	सुश्री लक्ष्मीकांता	निजी सहायक	11
9.	बिना संघर्ष, व्यर्थ है जीवन	श्रीमती रेखा जुयाल	कार्यकारी सहायक	13
10.	हिन्दी दिवस	श्री भूपाल सिंह	कार्यकारी सहायक	14
11.	विचार ही चरित्र निर्माण करते हैं	श्री मोहम्मद जावेद	निजी सहायक	16
12.	नारी तेरे अनेक रूप	श्रीमती दीपिका दीवान	वरि. कार्यालय सहायक	18
13.	ईश्वर कृपा (कविता)	श्रीमती रेखा जुयाल	कार्यकारी सहायक	19
14.	पिता की भावनाएं (कविता)	श्री रामकृष्ण पोखरियाल	निजी सहायक	20
15.	जीवन एक गुलदस्ता (कविता)	श्री लवली सूदन	कार्यकारी सहायक	21
16.	माँ वो जो तुमको काबिल इंसान बना दे	मो. शाहिद	स्टेशनरी इंचार्ज	22
17.	अमरनाथ यात्रा का वृतान्त	श्री नवीन जोशी	कार्यकारी सहायक	23
18.	काल (मृत्यु) से मित्रता	श्री रामकृष्ण पोखरियाल	निजी सहायक	25
19.	काश जिंदगी सचमुच किताब होती (कविता)	श्रीमती नेहा कोहली	वरि. का. सहायक	27
20.	एक दिन जब ऑफिस से घर के लिए निकला	श्री रोहित कुमार	निजी सहायक (तकनीकी)	28
21.	मनमौजी मोटा (कविता)	श्री संजय चौहान	संदेश वाहक	29
22.	जाके राखो साईंया मार सके ना कोई	श्री मनोज सिंह बिष्ट	ऑफिस बॉय	30
23.	मानव एवं मेहनत का मूल्य	सुश्री रेनू शर्मा	कार्यालय सहायक	31
24.	भारत प्रगति के पथ पर	श्री मोहित माथुर	कार्यकारी सहायक	32
25.	इंजीनियर (कविता)	श्री अमित कुमार पाण्डेय	युवा सिविल अभियन्ता	33
26.	आत्मविश्वास	श्रीमती रेखा	कार्यालय सहायक	34
27.	भ्रूण हत्या कारण एवं निवारण	श्री प्रदीप चितौड़	लेखापाल (वि एवं प्रशा)	36
28.	खुशी (कविता)	श्री पवन	स्टोर अटेंडेंट	39
29.	पत्थर के रूप (कविता)	सुश्री रेनू शर्मा	कार्यालय सहायक	40
30.	हिन्दी का दर्द (कविता)	श्री राहुल चराया	सी.ए.	41
31.	भाषा तुम (कविता)	श्रीमती गुलशन अरोड़ा	निजी सहायक	42

32.	भारत में ग्रामीण जीवन	श्री दीपांकर कुमरा	कार्यकारी सहायक	43
33.	दादाजी के सपने	श्री लवली सूदन	कार्यकारी सहायक	44
34.	सुनहरी मोमबती स्टेंड	श्री शुभम शर्मा	निजी सहायक	46
35.	धरती का द्वन्द	श्रीमती प्राची गुसाई	कार्यकारी सहायक	48
36.	किसान (कविता)	श्री रोहित कुमार	निजी सहायक (तकनीकी)	51
37.	प्यार के दो मीठे बोल	श्री संजय चौहान	संदेश वाहक	52
38.	एक प्यारी सी सुबह (कविता)	श्री मनोज सिंह बिष्ट	ऑफिस बॉय	54
39.	इश्वरीय सेवा का फल	मो. शाहिद	स्टेशनरी इंचार्ज	55
40.	मजदूरों की मजदूरी	श्री अनिल कुमार	प्रेषक	56

संदेश

मुझे हर्ष है कि राष्ट्रीय ग्रामीण अवसरंचना विकास एजेंसी (एन.आर.आई.डी.ए.) ने राजभाषा स्मारिका के षष्टम (6वां) अंक को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। विगत कई वर्ष से राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी हिन्दी स्मारिका को प्रकाशित कर रहा है जो हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु किए जा रहे प्रयासों की श्रृंखला में एक उत्कृष्ट प्रयास है, जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

मुझे विश्वास है कि स्मारिका का नया अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक व मनोरंजक होगा तथा कार्यालय में राजभाषा हिन्दी में अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसरंचना विकास एजेंसी कार्यालय में लगातार हिन्दी पखवाड़े का आयोजन तथा राजभाषा स्मारिका के प्रकाशन के लिए एजेंसी के सभी अधिकारी व कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं।

अलका उपाध्याय
महानिदेशक, एन.आर.आई.डी.ए.

प्यार की भाषा हिन्दी

प्यार की भाषा हिंदी
घरबार भाषा की हिंदी
व्यवहार की भाषा हिँदी
सारी दुनिया कहती है
है प्यार की भाषा हिंदी ।

हर वर्ण वर्णमाला का
है द्वार विद्यालय का
हर शब्द तपस्या गृह है
है आसन मृगछाला का
मधुर प्यार की भाषा हिंदी
मनुहार की भाषा हिंदी
सारी दुनिया कहती है
है प्यार की भाषा हिंदी ।

हिंदी का अक्षर
है वीणापाणी का स्वर
गूंजी है जिससे धरती
गूंजा है जिससे अम्बर
उपहार की भाषा हिंदी
त्योहार की भाषा हिंदी
सारी दुनिया कहती है
है प्यार की भाषा हिंदी ।

हिंदी की बोलीबानी
जाने है प्रीत निभानी
सब को ही गले लगाया
बनकर खुद हिंदुस्तानी
उपकार की भाषा हिंदी
सत्कार की भाषा हिंदी
सारी दुनिया कहती है
है प्यार की भाषा हिंदी ।

➢ शांति प्रिया सरेला
निदेशक (वि. एंव प्रशा.)

मूल्य

घनश्याम नाम का एक किसान था जो बहुत ही गरीब था किन्तु फिर भी अपने परिवार के साथ बहुत खुशी से रहता था, पूरा दिन खेतों में मज़दूरी करता और अपनी नेक कमाई से अपने घर का गुजारा चलाता। वह गरीब होने के बावजूद भी बहुत धैर्यवान व समझदार इन्सान था।

रोजाना की तरह आज भी घनश्याम सुबह उठकर अपनी दिनचर्या पूरी करके खेतों की तरफ चल पड़ा। घनश्याम खेत में हल चला ही रहा था, कि उसे उसके हल से कुछ टकराने का अहसास हुआ, उसने जाकर देखा तो वह एक पत्थर था जो उसके हल से टकरा रहा था, तभी घनश्याम के पैर में कुछ चुभा, देखा तो पता चला कि एक कील उसके जूते में फंस गई थी जो उसे चुभ रही थी।

घनश्याम के सामने वही पत्थर पड़ा था, उसने वह पत्थर उठाया और खेत के किनारे बैठकर उस पत्थर से अपने जूते की कील निकालने की कोशिश करने लगा। तभी वहां से एक व्यक्ति निकला, जो कि पेशे से जौहरी था उसने देखा कि घनश्याम जिस पत्थर को जोर जोर से कील में मार रहा था वह एक पत्थर नहीं अपितु एक बिना तराशा हुआ कीमती हीरा था जो की लाखों का था। जौहरी को समझ आ गया था कि किसान को उस पत्थर जैसे दिखने वाले हीरे की कीमत का अंदाजा भी नहीं है। अतः जौहरी के मन में लालच उमड़ पड़ा। उसने सोचा कि मैं क्यों ना इस किसान को इस हीरे की असली कीमत बताए बिना इससे यह खरीद लूं।

यह सोच कर वह घनश्याम से बोला, भाई अगर तुम मुझे ये पत्थर दे दो तो मैं तुम्हें इसके बदले एक रूपया दूंगा। यह सुनकर घनश्याम मन ही मन मुस्कराया और सोचने लगा कि यह कैसा मूर्ख इंसान है इस पत्थर जिसकी कोई कीमत नहीं है, उसे खरीदने की बात कर रहा है जिसे मैं फेंकने ही वाला था और वह एक रूपये में वह पत्थर जौहरी को देने के लिए तैयार हो गया। जौहरी वह पत्थर जैसे दिखने वाले हीरे को पाकर बहुत खुश हुआ और उसे बहुत ही सावधानीपूर्वक लेकर घर की ओर चल पड़ा। वह मन ही मन सोचता और खुश होता हुआ जा रहा था कि उसने किस तरह बहुत ही चतुराई से उस किसान से लाखों का हीरा कौड़ियों के मोल में ले लिया था। यही सोचते –सोचते वह अपने घर के दरवाजे तक आ पहुंचा, वह घर के अंदर घुसने ही जा रहा था कि घर की चौखट में उसको ठोकर लगी जिससे वह कीमती पत्थर उसके हाथ से फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो गया, यह देखते ही जौहरी की सारी खुशी पत्थर के साथ ही चकनाचूर हो गई। वह

अपना माथा पीट–पीटकर रोने लगा और बोला कि इस पत्थर को किसान इतनी जोर–जोर से पटक रहा था किन्तु इसका कुछ भी नहीं हुआ और मैं उसे इतनी सावधानी से सहेज कर घर लाया किन्तु फिर भी ऐसा क्यों हुआ कि यह जरा सी टक्कर लगते ही चकनाचूर हो गया और अब इसका मूल्य कौड़ियों के भाव नहीं रह गया । तभी उस हीरे के टुकड़ों से आवाज आई कि हे जौहरी उस किसान की नजरों में मैं एक पत्थर था जिसका कोई मूल्य नहीं होता किन्तु फिर भी उसने एक मूल्यहीन पत्थर को एक रूपये में बेचा क्योंकि वह मेरे असल मूल्य से अन्जान था। किन्तु तुम एक जौहरी हो जिसने मेरे असल मूल्य को जानते हुए भी मेरी कीमत एक रूपये लगाई इस कारण मेरा हृदय दुखी हुआ तो मुझे अब पश्चाताप क्यों? यह कहकर वह आवाज शांत हो गई। अब जौहरी को अपनी गलती का एहसास हो चुका था, जौहरी उठा और सभी टुकड़ों को समेट कर उसी खेत में डाल आया।

- **कैलाश कुमार बिष्ट**
  उप निदेशक (वि एवं प्रशा.)

इन्टरनेट

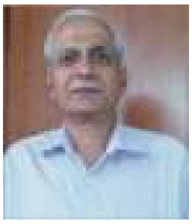

आज इन्टरनेट का है दौर अजीब ।
आदमी के है कम्प्यूटर सबसे करीब ।।

पढ़ना हो कोई लेख या कोई शोध ।
कम्प्यूटर पर उपलब्ध है आज सभी खोज ।।

क्या दवा करेगी काम, रास्ता कौन कहां ले जाएगा, सब की खबर ।
खाना बनाने की व्यंजन विधि को पढो या फिर जंगल का कर लो सफर ।।

कौन युक्ति, कौन नीति, कौन भक्ति, कौन शक्ति का ज्ञान भी ।
इन्टरनेट व कम्प्यूटर हैं आज के शक्ति शाली अविष्कार व विज्ञान भी ।।

जीवन में आज न कोई रहस्य रहा न कोई व्यथा ।
इन्टरनेट से पूछो और जानो अपने पराए सभी की कथा।

- सत्यदेव सिंह
परामर्शदाता (वि एवं प्रशा.)

भाई

दर्द वेदना के तानो ने
आज दिया झंकार मुझे
उसने ही थप्पड़ दिखाया
जिसने दिया था प्यार मुझे।

अहम बड़ा हो सकता है कितना
आज ये जाना है
आज भाई ने भाई से बढ़कर
भाई को पहचाना है
गलती थी अपराध था किसका
बोध नहीं मुझ बालक को
आज निशब्द कर डाला
हालातों ने संचालक को ।

क्या इतना भी नहीं है मेरा
तुझ पर ये अधिकार सुनो
अगर कभी कुछ कह देता हूँ
समझ उसे भी प्यार सुनो
मम अनुज सम प्रिय तुम
यही राम की रीत सुनो
गलती अगर होती है हमसे
माफ़ करो अपनी जीत चुनो ।

तर्क तुम्हारा है निरर्थक
कि सुनना नहीं भाता है
सुनकर ही निर्मम बालक
शब्द स्वरुप बोल पाता है ।

अपनों के ह्रदयों को जो तुम
उचित सम्मान नहीं दोगे
इस जीवन में सारे अपने खुद ही
तुम प्यारे खो दोगे ।।

➢ हरि सिंह सैनी
परामर्शदाता (वि.एवं प्रशा.)

मेरे ज़ज्बात

अकेली बैठी थी एक दिन मैं अपने मकान में,
चिड़िया बना रही थी घोंसला रोशनदान में।

पल भर में घूम फिर कर आती जाती थी वो।
छोटे मोटे तिनके चोंच में भर लाती थी वो।

बना रही थी वो अपना घर एक न्यारा,
कोई तिनका था, ना ईंट ना कोई गारा।

कुछ दिन बाद जब ....
मौसम बदला, तेज हवा के झोंके आने लगे,
नन्हे से दो बच्चे घोंसले में चहचहाने लगे।

पाल रही थी चिड़िया उन्हें,
पंख निकल रहे थे दोनों के
पैरों पर करती थी खड़ा उन्हें।

देखती थी मैं हर रोज उन्हें
जज्बात मेरे उनसे कुछ यूँ जुड़ गए,
पंख निकलने पर दोनों बच्चे हवा में
मां को छोड़ अकेले उड़ गए..

चिड़िया से पूछा मैंने..
तेरे बच्चे तुझे अकेला क्यों छोड़ गए
तू तो मां है उनकी
फिर ये रिश्ता क्यों तोड़ गए.

चिड़िया बोली...
परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है

इंसान का बच्चा.....
पैदा होते ही अपना हक जमाता है,
न मिलने पर वो मां बाप को
कोर्ट कचहरी तक भी ले जाता है।

मैंने बच्चों को जन्म दिया
पर करता कोई मुझे याद नहीं,
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे
क्योंकि मेरी कोई जायदाद नहीं।

➢ शांति प्रिया सरेला
निदेशक (वि एंव प्रशा.)

एक प्राचीन कथा

घने वन में एक तपस्वी साधनारत था आंख बंद किए सतत प्रभु स्मरण में लीन। स्वर्ग को पाने-की उसकी आकांक्षा नहीं थी और न भूख की चिंता थी, ना प्यास की। वन में एक दरिद्र युवती लकड़ियां बीनने आया करती थी। वह दया खाकर कुछ फल तोड़ लाती, पत्तों के दोने बना कर सरोवर से जल भर लाती, और तपस्वी के पास छोड़ जाती। तपस्वी अपनी तपस्या में लीन रहता था। फिर धीरेधीरे- उसकी तपस्या और भी सघन हो गई फल बिना खाए ही पड़े रहने लगे; जल दोनों में पड़ापड़ा ही गंदा हो जाता न उसे याद रही भूख की -और न प्यास की। लकड़ियां बीनने वाली युवती बड़ी दुखी और उदास होती, पर कोई उपाय भी न था। इंद्रासन डोला इंद्र चिंतित हुए तपस्या भंग करनी जरूरी है; सीमा के बाहर जा रहा है यह व्यक्ति, क्या स्वर्ग के सिंहासन पर कब्जा करने का इरादा है? लेकिन कठिनाई ज्यादा न थी, क्योंकि इंद्र मनुष्य के मन को जानता है। स्वर्ग से जैसे एक श्वास उतरीसूखी--, दीनदरिद्र-,कालीकलूटी वह युवती अचानक- अप्रतिम सौंदर्य से भर गई; जैसे एक किरण उतरी स्वर्ग से और उसकी साधारण सी देह स्वर्णमंडित हो गई। पानी भर रही थी सरोवर से तपस्वी के लिए, अपने ही प्रतिबिंब को देखा, भरोसा न कर पाई साधारण स्त्री न रही--, अप्सरा हो गई; खुद के ही बिंब को देख कर मोहित हो गई। फिर एक दिन तपस्वी ने आंख खोलीं। इस वनस्थली से जाने का समय आ गया और गहन करना है, पर्वतशिखरों की -यात्रा पर जाना है। उसने युवती से कहा कि मैं अब जाऊंगा, यहां मेरा कार्य पूरा हुआ। अब और भी कठिन मार्ग चुनना है, स्वर्ग को जीत कर ही रहना है।युवती रोने लगी। उसकी आंख से आंसू गिरने लगे। उसने कहा, मैंने कौन सा दुष्कर्म किया कि मुझे अपनी सेवा से वंचित करते हो और तो कुछ मैंने कभी मांगा नहीं तपस्वी ने सोचा, उस युवती के चेहरे की तरफ देखा। ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था।, लेकिन कुछ महिमा उतर आई थी। अंगप्रत्यंग वही थे-, लेकिन कोई स्वर्णआभा से घिर गए थे। जैसे कोई गीत की- कड़ी, भूलीबिसरी-, फिर किसी संगीतज्ञ ने बांसुरी में भर कर बजाई हो। तपस्वी बैठ गया। उसने पुनः आंख बंद कर लीं। वह रुक गया।

उस रात युवती सो न सकी विजय का उल्लास भी था और साधु को पतित करने का पश्चात्ताप भी। आनंदित थी कि जीत गई और दुखी थी कि किसी को भ्रष्ट किया, किसी के मार्ग में बाधा बन गई, और कोई जो ऊर्ध्वगमन के लिए निकला था,उसकी यात्रा को भ्रष्ट कर दिया। रात भर सो न सकी और रोई भी, हंसी भी। सुबह निर्णय लिया, आकर तपस्वी के चरणों में झुकी और कहा, मुझे जाना पड़ेगा, मेरा परिवार दूसरे गांव जा रहा है।तपस्वी ने आशीर्वाद दिया कि जाओ, जहां भी रहो, खुश रहो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। युवती चली गई। वर्ष बीते, तपस्या पूरी हुई। इंद्र उतरा, तपस्वी के चरणों में झुका और कहा, स्वर्ग के द्वार स्वागत के लिए खुले हैं। तपस्वी ने आंखें खोलीं और कहा, स्वर्ग की अब मुझे कोई जरूरत नहींकर पाया कि कोई मनुष्य और कहेगा कि स्वर्ग की मुझे इंद्र तो भरोसा भी न ! अब कोई जरूरत नहीं। इंद्र ने सोचा, तब क्या मोक्ष की आकांक्षा इस तपस्वी को पैदा हुई है। पूछा, क्या मोक्ष चाहिए? तपस्वी ने कहा, नहीं, मोक्ष का भी मैं क्या करूंगा तब तो इंद्र चरणों में सिर रखने को ही था कि यह तो अत्यंत बात हो गई और तपस्या का अंतिम चरण हो गया, जहां मोक्ष की आकांक्षा भी खो जाती है। पर झुकने के पहले उसने पूछा, मोक्ष के पार तो कुछ भी नहीं है, फिर तुम क्या चाहते हो? उस तपस्वी ने कहा, कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने वाली युवती कहां है, वही चाहिए। ऐसा मत सोचना कि ऐसा विकल्प उस तपस्वी के सामने ही था कि युवती थी, स्वर्ग था, दोनों के बीच चुनना था। तुम्हारे सामने भी विकल्प वही है; सभी के सामने विकल्प वही हैया तो उन सुखों को --चुनो जो क्षणभंगुर हैं, या उसे चुनो जो शाश्वत है; या तो शाश्वत को गंवा दो क्षणभंगुर के लिए, या क्षणभंगुर को समर्पित कर दो शाश्वत के लिए और अधिकतम लोग वही चुनेंगे, जो तपस्वी ने चुना। ऐसा मत सोचना कि तुमने कुछ अन्याय किया है। चाहे इंद्र तुम्हारे सामने खड़ा हुआ हो या न खड़ा हुआ हो; चाहे किसी ने स्पष्ट स्वर्ग और पृथ्वी के विकल्प सामने रखे हों, न रखे होंविकल्प वहां-- हैं। और जो एक को चुनता है, वह अनिवार्यतः दूसरे को गंवा देता है। जिसकी आंखें पृथ्वी के नशे से भर जाती हैं, वह स्वर्ग के जागरण से वंचित रह जाता है और जिसके हाथ पृथ्वी की धूल से भर जाते हैं, स्वर्ग का स्वर्ण बरसे भी तो कहां बरसे, हाथों में जगह नहीं होती हाथ खाली चाहिए तो ही

स्वर्ग ही हो सकता है। आत्मा खाली चाहिए तो ही परमात्मा विराजमान हो सकता है। तुम्हारी आत्मा में अगर कोई आसक्ति पहले से ही विराजमान है, अगर वहां सिंहासन पहले से ही भरा है, तो तुम यह मत कहना कि परमात्मा ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है; यह तुम्हारा ही चुनाव है। अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता, तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना, तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी, जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है। एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है। लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता; सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता। तुम्हें जन्मों जन्मों तक सत्य को इंकार करने की-स्वतंत्रता है। यही मनुष्य की गरिमा है, यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी। गरिमा है, क्योंकि स्वतंत्रता है, चुनाव की अप्रतिम स्वतंत्रता है;दुर्भाग्य, क्योंकि हम गलत को चुन लेते हैं।

➢ हरि सिंह सैनी
परामर्शदाता (वि.एवं प्रशा.)

मैनेजमेंट फंडा

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आज चारों ओर प्रबंधन और इससे जुड़ी हुई बारीकियों को सीखने पर जोर दिया जा रहा है। युवा वर्ग भी इस क्षेत्र में दक्षता हासिल कर कैरियर बनाने के लिए प्रबंधन संस्थानों में प्रवेश कर इसे सीखने को लालायित है। इस लेख के माध्यम से पौराणिक कथा से जुड़े प्रसंगों के द्वारा रोजमर्रा की जिंदगी ही नहीं, अपितु कार्यस्थल और बिजनेस प्रबंधन की कला को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

सुंदरकाण्ड के प्रसंगों से सीखे प्रबंधन के सबकः

क. मेंटर : जामवंत जी ने हनुमानजी को उनकी शक्तियों का अहसास कराया था। हम सभी में कुछ खूबियां ऐसे होती है, जिनका अहसास खुद हमें भी नहीं होता। कार्यस्थल और जीवन में भी कुछ ऐसे साथी होने चाहिए जामवंत जी की तरह हमारे क्षमता को पहचाने और प्रेरित करें।

ख. प्लानर : लंका में प्रवेश करने के बाद पहाड़ की चोटी से हनुमान जी ने रावण की स्वर्ण नगरी लंका की बसावट देखी और योजना बनाई कि उन्हें आखिर क्या–क्या करना है। लंका में प्रवेश करने हेतु उन्होंने खुद को आकार में छोटा कर लिया। जब जैसी परिस्थिति हो खुद को वैसा ढाल लेना चाहिए। ऐसा करेंगे तो विभीषण से मिलने में भी समय नहीं लगेगा।

ग. फोकस और विनम्रता : जब भी हम किसी लक्ष्य की तरफ बढ़ते हैं कई बाधांए आती है। कुछ प्रलोभन भी मिलते है। ऐसा ही प्रलोभन लंका जाते समय हनुमान जी को मैनक पर्वत ने दिया था। कुछ देर सुस्ताने का, लेकिन हनुमानजी इसमें नहीं फंसे। विनम्रतापूर्वक यह कहकर आगे बढ़ गये कि ''जब तक मैं काम नहीं कर लेता, मैं रूक नहीं सकता''।

घ. फॉलोअर : हनुमानजी चाहते तो सीताजी को उसी समय अपने साथ ला सकते थे और वे इसमें समर्थ भी थे। लेकिन उन्होंने अपने अराध्य और श्री रामजी जी के आदेश का पालन किया । लेकिन सभी राक्षसों का सर्वनाश भगवान श्री रामजी के हाथो होना था। अतः उन्होंने अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन किया।

च. स्मार्टनेस : लंका जाते समय समुद्री राक्षसी सुरसा ने हनुमानजी की राह में बाधा उत्पन्न कर उन्हें खाने की कोशिश की। हनुमानजी चाहते तो सुरसा से युद्ध करके भी जीत सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। बल प्रयोग करने की बजाय उन्होंने चतुराई से काम लिया। अपना आकार छोटा किया और सरुसा के मुंह में जाकर बाहर आ गए। सार यह है कि लड़ने

की बजाय सुरसा का अंह संतुष्ट कर अपनी ऊर्जा व्यर्थ न करते हुए किसी बड़े कार्य/प्रयोजन हेतु आगे बढ़ जाए।

छ. टीम स्पिरिट : जब हनुमानजी लंका से लौटते है तो सर्वप्रथम अपने दल के पास पहुंचते है। दल के साथ सेनापति सुग्रीव के पास जाते हैं और फिर जामवंत के पास। जामवंत सबको श्रीराम के पास ले जाते हैं। कार्य की शबाशी अकेले न लेते हुए पूरी टीम को इसमें शामिल करे ताकि उनका उत्साहवर्धन हो और आगे के महत्वपूर्ण प्रयोजनों/कार्यों को परिलक्षित करने हेतु उनका मनोबल ऊँचा बना रहे।

- **विजय इंग्ले**
  प्रोग्रामर

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा- कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की वजह से पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि को हम ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

पृथ्वी के तापमान में ग्लोबल वार्मिंग का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है । बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर गल रहे हैं समुद्र के पानी का स्तर बढ़ रहा है जिससे तटीय इलाकों के डूबने का खतरा पैदा हो गया है । वायु में बढ़ती प्रदूषण की मात्रा तथा ग्लोबल वार्मिंग के कारण गरम लहरों की आवृत्ति तथा तीव्रता भी बढ़ गई है । ग्लोबल वार्मिंग के चलते ही जंगलों में आग लगने जैसे हादसे शुरू हो गये हैं । बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप ही बाढ़,तूफान, सूखा, भीषण गर्मी जैसी आपदाओं से कई क्षेत्रों में मनुष्य जीवन खतरे में पड़ गया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ जैसे फेफड़ों में इन्फेक्शन, सांस लेने में दिक्कत, लू लगना, शरीर के अंगों का निष्क्रिय होना आदि बीमारियां बढ़ गई हैं । पृथ्वी के सतही तापमान में वृद्धि के कारण वायु प्रदूषण के स्तर में होती वृद्धि ने कई स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को जन्म दिया है । खासकर श्वास की समस्याएं और फेफड़ों के सक्रंमण के मामलों में काफी बढ़ोतरी हुई है । इससे अस्थमा के रोगी सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं । जिसके परिणामस्वरूप महासागर का पानी दिन प्रतिदिन गर्म हो रहा है । ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई जगहों के मौसम में भयंकर बदलाव हो रहे हैं । कई जगहों में बार-बार भारी बारिश तथा बाढ़ के हालत बन रहे हैं जबकि कुछ क्षेत्रों को अत्याधिक सूखा का सामना करना पड़ रहा है । ग्लोबल वार्मिंग ने न केवल लोगों के जीवन को प्रभावित किया है बल्कि कई क्षेत्रों में भूमि की उपजाऊ शक्ति को भी कम कर दिया है । इसी वजह से कृषि भूमि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।

गर्म लहरों का बढ़ता प्रभाव से पृथ्वी की सतह के तापमान में वृद्धि के कारण गर्म तरंगों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है । इसने सिरदर्द, लू लगने से बेहोश होना, चक्कर आना और यहां तक कि शरीर के प्रमुख अंगों को नुकसान पहुँचाने वाली जैसी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दिया है । बढ़ती स्वास्थ्य समस्याएं से ग्लोबल वार्मिंग के कारण स्वास्थ्य समस्याओं में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है । हवा में प्रदूषण के बढ़ते स्तर से साँस लेने की समस्याएं और फेफड़े के संक्रमण जैसी बीमारियाँ पनप रही है । इससे अस्थमा के रोगियों के लिए समस्या पैदा हो गई है । तेज़ गर्म हवाएं और बाढ़ भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में इजाफे का एक कारण है । बाढ़ के कारण अलग-अलग क्षेत्रों में जमा हुए पानी में मच्छरों, मक्खियों और अन्य कीड़ों की संख्या बढ़ रही है। जिससे खेतों में उगती फसल का नुकसान हो रहा है। ऐसी जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि भूमि पर विषम प्रभाव पड़ रहा है । जानवरों के विलुप्त होने का खतरा

ग्लोबल वार्मिंग के कारण न केवल मनुष्यों के जीवन में कई स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं बल्कि इसने विभन्नि जानवरों के लिए भी जीवन कठिन बना दिया है । जो मौसम की स्थितियों में होते परिवर्तन से विलुप्त हो चुकी है। मौसम में होते बदलाव में ग्लोबल वार्मिंग से विभिन्न क्षेत्रों के मौसम में भारी बदलाव होने लगा है। भयंकर गर्मी पड़ना, तेज़ गति का तूफान, तीव्र चक्रवात, सूखा, बेमौसम बरसात, बाढ़ आदि सब ग्लोबल वार्मिंग का ही परिणाम है ।

ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर मुद्दा है इसके नतीजे भयानक तथा विनाशकारी होते जा रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामों को कम करने के लिए सबसे पहले कार्बन उत्सर्जन करने वाले साधनों को तुरंत नियंत्रित किया जाना चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति द्‌वारा अपनी ओर से इस मानव कल्याणकारी कार्य करने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

- **लक्ष्मीकान्ता**

निजी सहायक (पी ।।।)

बिना संघर्ष, व्यर्थ है जीवन

संघर्ष ही जीवन है । जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है । इस सृष्टि में छोटे बडे प्राणी सभी किसी रूप में संघर्षरत हैं । जिसने संघर्ष करना छोड़ दिया, उसका जीवन व्यर्थ है । जीवन में संघर्ष है प्रकृति के साथ, स्वयं के साथ, परिस्थितियों के साथ । तरह तरह के संघर्षों का सामना आए दिन हम सबको करना पड़ता है और इनसे जूझना होता है । जो इन संघर्षों का सामना करने से कतराते हैं, वे जीवन से भी हार जाते हैं, जीवन भी उनका साथ नहीं देता।

सफलता व कामयाबी की चाहत तो सभी करते हैं, लेकिन उस सफलता को पाने के लिए किए जाने वाले संघर्षों से कतराते हैं । मिलने वाली सफलता सबको आकर्षित भी करती है, लेकिन उस सफलता की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष को कोई नहीं देखता, न ही उसकी ओर आकर्षित होता है, जबकि सफलता तक पहुँचने की वास्तविक कड़ी वह संघर्ष ही है । हम जिन व्यक्तियों को सफलता की ऊँचाइयों पर देखते हैं, उनका भूतकाल अगर हम देखेंगे तो हमें जानने को मिलेगा की यह सफलता जीवन के साथ बहुत संघर्ष से प्राप्त हुई है ।

जब संघर्षों की बात की जा रही है तो फिर एवरेस्ट पर चढ़ते समय आने वाले संघर्षों की बात क्यों न की जाए? एवरेस्ट की चढ़ाई अत्यंत कठिन चढ़ाई पर सफलता पाने का गौरव हासिल करने वाली पहली महिला जुंको ताबेई का कहना है - "दुनिया के विभिन्न मंचों पर सम्मानित होना अच्छा लगता है, लेकिन यह अच्छा लगना उस अच्छा लगने की तुलना में बहुत कम है, जिसकी अनुभूति मुझे एवरेस्ट पर कदम रखने के समय हुई थी, जबकि वहां तालियाँ बजाने वाला कोई नहीं था । उस समय कंपकंपाती बर्फीली हवा, कदमकदम पर मौत की आहट-, लड़खड़ाते कदम और फूलती साँसों से संघर्ष के बाद जब मैं एवरेस्ट पहुँची तो यही लगा कि मैं दुनिया की सबसे खुश इंसान हूँ ।"

वास्तव में जब व्यक्ति अपने संघर्षों से दोस्ती कर लेता हे तो प्रसन्नता के साथ उन्हें अपनाता है। उत्साह के साथ चलता है तो संघर्ष का सफर उसका साथ देता है और उसे कठिन से कठिन डगर को पार करने में मदद करता है। लेकिन यदि व्यक्ति जबरन इसे अपनाता है तो बेरूखी के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ता है, तो वह भी ज्यादा दूर तक नहीं चल पाता, बड़ी कठिनाई के साथ ही वह थोड़ा बहुत आगे बढ़ पाता है। जब जीवन में एवेरेस्ट जैसी मंजिल हो और उस तक पहुंचने के लिए कठिन संघर्षों का रास्ता हो, तो घबराने से बात नहीं बनती, संघर्षों को अपनाने से ही मंजिल मिल पाती है।

जब हम संघर्ष करते हैं तभी हमें अपने बल का सामर्थ्य का पता चलता है। संघर्ष करने से ही आगे बढ़ने का हौसला, मिलता है और अंततः हम अपनी मंजिल को हासिल कर लेते हैं। बिना संघर्ष किए तो ईश्वर भी साथ नहीं देता।

➢ रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक(विश्व बैंक)

हिंदी दिवस

भारत के संविधान ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को 1950 के अनुच्छेद 343 के तहत देश की आधिकारिक भाषा के रूप में 14 सितम्बर 1950 में अपनाया। इसके साथ ही भारत सरकार के स्तर पर अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाएं औपचारिक रूप प्रयोग में लाई गई। 1949 में भारत की संविधान सभा ने देश की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

<u>हिंदी दिवस का महत्व</u>

यह हर साल हिंदी के उपयोग पर जोर देने और आज की युवा पीढी जो अंग्रेजी से प्रभावित है के बीच इसको बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है (यह दिन हर साल हमें अपनी असली पहचान की याद दिलाता है और देश के लोगों को एकजुट करता है। जहां भी हम जाएँ हमारी भाषा, संस्कृति हमारे रहते हैं और ये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति की भावना के लिए भी प्रेरित करता है। आज के समय में अंग्रेजी की ओर एक झुकाव है जिसे समझा जा सकता है क्योंकि अंग्रेजी का इस्तेमाल दुनिया भर में प्रचलन है। यह दिन हमें यह याद दिलाने का एक छोटा सा प्रयास है कि हिंदी हमारी आधिकारिक भाषा है और इसका बहुत अधिक महत्व है। भारतीयों के लिए वह दिन गर्व करने का था जब संविधान सभा ने हिन्दी को देश की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। कई स्कूल, कॉलेज और सरकारी कार्यालयों में हिन्दी दिवस को बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। उत्सव मनाने के लिए इन जगहों को सजाया जाता है और कई लोग हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के महत्व के बारे में बात करने के लिए आगे आते है। हर सरकारी कार्यालयों व विद्यालयों में कविता, लेख,वादविवाद-, नोटिंग ड्राफिटंग, कम्प्यूटर में टंकण आदि प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्याक्रमों को बढ़ावा देते हैं। हमारी राष्ट्र भाषा के साथ ही हमारी संस्कृति के महत्व पर जोरे देने के लिए हिन्दी दिवस एक अच्छा अवसर है।

<u>भारत में सबसे अधिक बोलने वाली भाषा-हिन्दी</u>

हिंदी भाषा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड और झारखंड सहित कई भारतीय राज्यों की आधिकारिक भाषा है। बिहार देश का पहला राज्य था जिसने अपनी एकमात्र आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया।

भारत में हिंदी सबसे व्यापक रूप से उपयोग व समझी जाने वाली भाषा है। हालांकि अंग्रेजी के प्रति अभी भी भारतवासियों का झुकाव है और इसके महत्व पर स्कूलों और अन्य स्थानों पर जोर दिया जाता है परन्तु हिंदी हमारे देश की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में मजबूत है। 2001 में आयोजित जनगणना में 422 लाख से अधिक लोगों ने अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी का उल्लेख किया।

हिंदी दिवस पर लोगों को जागरुक करना

हमें कम से कम यह प्रयास तो अवश्य करना चाहिए कि हिंदी दिवस के दिन हम अधिक से अधिक लोगों को हिंदी का महत्व समझायें और हिन्दी में कार्य करें। हिंदी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा जैसे अवसरों पर हम सबको मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि हम अधिक से अधिक लोगों तक हिंदी के उपयोग के महत्व को समझा सके। वर्तमान समय को देखते हुए हम यही कह सकते है कि मात्र कुछ लोगों के प्रयास से हिंदी के ऊपर मंडराता यह संकट दूर नहीं किया जा सकता है। इसके लिए हमें सम्मिलित प्रयास करने की आवश्यकता है। हमें सामान्य लोगों को हिंदी का महत्व समझाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही हिंदी दिवस जैसे अवसरों पर हम हिंदी का प्रचार-प्रसार करके भी इसके उपयोग को बढ़ाने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

- **भूपाल सिंह**

कार्यकारी सहायक

विचार ही चरित्र निर्माण करते है

विचार देर तक मस्तिष्क में बना रहता है, वह अपना एक स्थायी स्थान बना लेता है। यही स्थायी विचार मनुष्य का संस्कार बन जाता है। संस्कारों का मानव- जीवन में बहुत महत्त्व है। सामान्य -विचार कार्यान्वित करने के लिये मनुष्य को स्वयं प्रयत्न करना पड़ता है, किन्तु संस्कार उसको यंत्रवत संचालित कर देता है। शरीर -यन्त्र जिसके द्वारा सारी क्रियाएँ सम्पादित होती हैं, सामान्य विचारों के अधीन नहीं होता। इसके विपरीत इस पर संस्कारों का पूर्ण आधिपत्य होता है। न चाहते हुए भी, शरीर -यंत्र संस्कारों की प्रेरणा से हठात् सक्रिय हो उठता है और तदनुसार आचरण प्रतिपादित करता है। मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। इन्हें यदि मानव -जीवन का अधिष्ठाता और आचरण का प्रेरक कह दिया जाय तब भी असंगत न होगा।

चरित्र मनुष्य की सर्वोपरि सम्पत्ति है। विचारकों का कहना है— ''धन चला गया, कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य चला गया, कुछ चला गया। किन्तु यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया।'' विचारकों का यह कथन शत -प्रतिशत भाव से अक्षरशः सत्य है। गया हुआ धन वापस आ जाता है, नित्य प्रति संसार में लोग धनी से निर्धन और निर्धन से धनवान् होते रहते हैं, धूप -छाँव जैसी धन अथवा अधन की इस स्थिति का जरा भी महत्त्व नहीं हैं। इसी प्रकार रोगों, व्यक्तियों और चिन्ताओं के प्रभाव से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता और तदनुकूल उपायों द्वारा बनता रहता है। नित्य प्रति अस्वास्थ्य के बाद लोगों को स्वस्थ होते देखे जा सकता है। किन्तु गया हुआ चरित्र दुबारा वापस नहीं मिलता। ऐसी बात नहीं कि गिरे हुए चरित्र के लोग अपना परिष्कार नहीं कर सकते। दुश्चरित्र व्यक्ति भी सदाचार, सद्विचार और सत्संग द्वारा चरित्रवान बन सकता है। तथापि वह अपना वह असंदिग्ध विश्वास नहीं पा पाता, चरित्रहीनता के कारण जिसे वह खो चुका होता है।

धन और स्वास्थ्य भी मानव -जीवन की सम्पत्तियाँ हैं— इसमें सन्देह नहीं। किन्तु चरित्र की तुलना में यह नगण्य हैं। चरित्र के आधार पर धन और स्वास्थ्य तो पाये जा सकते हैं किन्तु धन और स्वास्थ्य के आधार पर चरित्र नहीं पाया जा सकता। यदि चरित्र सुरक्षित है, समाज में विश्वास बना है तो मनुष्य अपने परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर पुनः धन की प्राप्ति कर सकता है। चरित्र में यदि दृढ़ता है, सन्मार्ग का त्याग नहीं किया गया है तो उसके आधार पर संयम, नियम और आचार -विचार के द्वारा खोया हुआ स्वास्थ्य फिर वापस बुलाया जा सकता है। किन्तु यदि चारित्रिक विशेषता का ह्रास हो गया है तो इनमें से एक की भी क्षति पूर्ति नहीं की जा सकती। इसलिये चरित्र का महत्त्व धन और स्वास्थ्य दोनों से ऊपर है। इसीलिये विद्वान् विचारकों ने यह घोषणा की है, कि— ''धन चला गया, तो कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य चला गया, तो कुछ गया। किन्तु यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया।''

विचारों का निवास चेतन मस्तिष्क और संस्कारों का निवास अवचेतन मस्तिष्क में रहता है। चेतन मस्तिष्क प्रत्यक्ष और अवचेतन मस्तिष्क अप्रत्यक्ष अथवा गुप्त होता है। यही कारण है कि कभी -कभी विचारों के विपरीत क्रिया हो जाया करती हैं। मनुष्य देखता है कि उसके विचार अच्छे और सदाशयी हैं, तब भी उसकी क्रियाएँ उसके विपरीत हो जाया करती हैं। इस रहस्य को न समझ सकने के कारण कभी -कभी वह बड़ा व्यग्र होने लगता है। विचारों के विपरीत कार्य हो जाने का रहस्य यही होता है कि मनुष्य की क्रिया प्रवृत्ति पर संस्कारों का प्रभाव रहता है और गुप्त मन में छिपे रहने से उनका पता नहीं चल पाता। संस्कार विचारों को व्यक्त कर अपने अनुसार मनुष्य की क्रियाएँ प्रेरित कर दिया करते हैं। जिस प्रकार पानी के ऊपर दीखने वाले छोटे से कमल पुष्प का मूल पानी के तेल में

कीचड़ में छिपा रहने से नहीं दीखता, उसी प्रकार परिणाम रूप क्रिया का मूल संस्कार अवचेतन मन में छिपा होने से नहीं दीखता।

चरित्र मानव -जीवन की सर्वश्रेष्ठ सम्पदा है। यही वह धुरी है, जिस पर मनुष्य का जीवन सुख -शान्ति और मान -सम्मान की अनुकूल दिशा अथवा दुःख -दारिद्र्य तथा अशांति, असन्तोष की प्रतिकूल दिशा में गतिमान होता है। जिसने अपने चरित्र का निर्माण आदर्श रूप में कर लिया उसने मानो लौकिक सफलताओं के साथ पारलौकिक सुख -शान्ति की सम्भावनाएँ स्थिर कर लीं और जिसने अन्य नश्वर सम्पदाओं के माया -मोह में पड़कर अपनी चारित्रिक सम्पदा की उपेक्षा कर दी उसने मानो लोक से लेकर परलोक तक के जीवनपथ में अपने लिये नारकीय पड़ाव का प्रबन्ध कर लिया। यदि सुख की इच्छा है तो चरित्र का निर्माण करिए। धन की कामना है तो आचरण ऊँचा करिए, स्वर्ग की वांछा है तो भी चरित्र को देवोपम बनाइए और यदि आत्मा, परमात्मा अथवा मोक्ष मुक्ति की जिज्ञासा है तो भी चरित्र को आदर्श एवं उदात्त बनाना होगा। जहाँ चरित्र है वहाँ सब कुछ है, जहाँ चरित्र नहीं वहाँ कुछ भी नहीं भले ही देखने -सुनने के लिए भण्डार के भण्डार क्यों न भरे पड़े हों।

चरित्र की रचना संस्कारों के अनुसार होती है और संस्कारों की रचना विचारों के अनुसार। अस्तु आदर्श चरित्र के लिये, आदर्श विचारों को ही ग्रहण करना होगा। पवित्र कल्याणकारी और उत्पादक विचारों को चुन -चुनकर अपने मस्तिष्क में स्थान दीजिए। अकल्याणकर दूषित विचारों को एक क्षण के लिये भी पास मत आने दीजिए। अच्छे विचारों का ही चिन्तन और मनन करिए। अच्छे विचार वालों से संसर्ग करिए, अच्छे विचारों का साहित्य पढ़िए और इस प्रकार हर ओर से अच्छे विचारों से ओत -प्रोत हो जाइए। कुछ ही समय में आपके उन शुभ विचारों से आपकी एकात्मक अनुभूति जुड़ जाएगी, उनके चिन्तन -मनन में निरन्तरता आ जायेगी, जिसके फलस्वरूप मांगलिक विचार चेतन मस्तिष्क से अवचेतन मस्तिष्क में संस्कार बन -बनकर संचित होने लगेंगे और तब उन्हीं के अनुसार आपका चरित्र निर्मित और आपकी क्रियाएँ स्वाभाविक रूप से आपसे आप संचालित होने लगेंगी। आप एक आदर्श चरित्र वाले व्यक्ति बनकर सारे श्रेयों के अधिकारी बन जायेंगे।

इस प्रकार इसमें कोई संशय नहीं रह जाता है कि विचारों की शक्ति अपार है, विचार ही संसार की धारणा के आधार और मनुष्य के उत्थान -पतन के कारण होते हैं। विचारों द्वारा प्रशिक्षण देकर मस्तिष्क को किसी ओर मोड़ा और लगाया जा सकता है। अस्तु बुद्धिमानी इसी में है कि मनुष्य मनोविकारों और बौद्धिक स्फुरणाओं में से वास्तविक विचार चुन ले और निरन्तर उनका चिन्तन एवं मनन करते हुए, मस्तिष्क का परिष्कार कर डाले। इस अभ्यास से कोई भी कितना ही बुद्धिमान्, परोपकारी, परमार्थी और मुनि, मानव या देवता का विस्तार पा सकता है।

➢ मोहम्मद जावेद
निजी सहायक (पी– I)

नारी तेरे रूप अनेक

नारी हमेशा कोमलांगी, सहनशील, संस्कारवान, संस्कृति की धरोहर को अपने अंदर समेटे हुए विशाल हृदया, विनयी, लज्जाशील रही है। किन्तु जहां ही इन गुणों का परित्याग हुआ है वहाँ नारी का अपमान होते देर नहीं लगी है। नारी को ही संस्कारों की धात्री क्यों कहा जाता है? क्यों पुरुष को ये गौरव नहीं मिला ? जाने कुछ तथ्य जिनसे हमे अपने नारी होने पर गर्व होगा और होना भी चाहिए। नारी का हर रूप मनभावन होता है जब वह छोटी सी नन्ही परी के रूप मे जन्म लेती है अपनी मन मोहक कलाओं से सबके दिलों पर छा जाती है । नारी का केवल बाहरी सौंदर्य देखने वाले विक्षिप्तों ने तो इसकी परिभाषा ही बदल दी है। अपनी अवस्थिति के लिए नारी स्वयं भी कई बार दोषी होती है। शायद कुछ आजाद विचारों वाली महिलाएं मेरे कथन से सहमत न हों , किन्तु सत्य तो सत्य है। उत्तम संस्कारों वाली महिलाएं अपनी संतानों को ही नहीं बल्कि कई पीढ़ियों को शुद्ध कर देती है। इसलिए नारी का संस्कारी होना उतना ही जरूरी है जितना हम सब जीवों और पेड़ पौधों को जीवित रहने के लिए पानी। उसे विभिन्न रूपों मे अपने दायित्वों का भली भांति निर्वहन करना होता है और हमेशा वह ही स्त्री खरी उतर पाती है जो इन गुणों से परिपूर्ण होती है । क्षमा, प्रेम, उदारता, विनय , समता, शांति, धीरता, वीरता, सेवा, सत्य, पर दुःख कातरता, शील, सद्भाव, सद्‌गुण इन सभी सौंदर्य से युक्त नारी गरिमामयी बन पाती है। लज्जा नारी का भूषण है और यह शील युक्त आँखों मे रहता है । बीमार एवं बड़ों बूढ़ों की सेवा केवल लज्जा के नाम पर न करना, लज्जा का दुरुपयोग है , सामने से सेवा नहीं करना पीछे से दुनिया भर की बुराई करना लज्जा का अपमान है । ये लज्जा नहीं कदाचित निर्लज्जा ही है। अपने भूषण को पहचानो ये गहना प्रभु ने हम नारियों को ही पहनाया है। वाणी मे , व्यवहार मे तथा शारीरिक हाव भाव से गर्व, उग्रता, कठोरता, टेढ़ापन रंच मात्र भी झलकने पर महिलाएं ही ऐसी महिला का सम्मान नहीं करती। क्योंकि मधुर, विनम्र , स्नेहपूर्ण वाणी से सबका दिल जीतने की कला प्रभु ने स्त्रियों को ही प्रदान की है जो एक मूक पशु को भी समझ मे आती है। संकट के समय भी कर्तव्य का पालन करते हुए मैदान मे डटे रहना धीरता है और विरोधी शक्तियों को निर्मूल करने का साहस तथा बुद्धिमानी से युक्त प्रयत्न करना वीरता है । ये भी स्त्रियों का ही भूषण है परंतु इसका प्रयोग आना चाहिए । गंभीर व्यक्ति और स्त्री तेज सब मानते है और उसी का आदर करते हैं । समानता का गुण भी महिलाओं को ही प्राप्त है किन्तु आज की नारी असमान रहने को ही अपनी विजय मानती है । जबकि वह चाहे तो समान दृष्टि रख कर परिवारों को टूटने से बचा सकती है। सिर्फ अपना अपना करने की चाहत ने आज परिवारों को तोड़ दिया है जबकि ये गुण संस्कारी महिलाओं का नहीं है । उसे तो समानता का गुण मिला है। उसे अपने निज गुण का ही अनुसरण करना चाहिए। दुःख कष्ट और प्रतिकूलता सहन करने का स्वाभाविक गुण महिलाओं को ही प्राप्त है । नारी पुरुष की अपेक्षा अधिक सहनशील होती है । कुशल प्रबंधन का स्वाभाविक गुण भी महिलाओं का है वे बहुत अच्छी तरह एवं श्रेणीबद्ध तरीके से हर काम को अंजाम देती है, घर हो या बाहर दोनों जगहों पर नारी ने स्वयं को सिद्ध किया है ।

➢ दीपिका दीवान
वरि. कार्यालय सहायक (पी–।।।)

ईश्वर कृपा

''यह जीवन'' ईश्वर आपकी माया है
तेरी ही धूप और तेरी ही छाया है।
यह जीवन हमने, सिर्फ एक बार पाया है
ईश्वर तुमने कितने जतन से हमें बनाया है।
तुमने कभी परिश्रम और कभी प्रयत्न कराया है
तभी हमने परिवार का सुख संसार सजाया है।
तुमने कभी संघर्ष व कभी उतार चढ़ाव दिखाया है
तुमने कभी प्रेरणा दी कभी हमारा विश्वास बढ़ाया है।
हम सब तेरे कृतज्ञ रहे हैं और आगे भी रहेंगे
सार्थक होगा जीवन आगे जब तुम्हारे सुमार्ग पर चलेंगे।।

➢ रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक (विश्व बैंक)

पिता की भावनायें

माँ का स्नेह तो बहुत मिला, कुछ पल मेरे भी पास रहो
पापा याद बहुत आते हो कुछ ऐसा भी मुझे कहो ।

थी मेरी ये ज़िम्मेदारी घर मे कोई मायूस न हो
मैं सारी तकलीफें झेलूँ और तुम सब महफ़ूज़ रहो
सारी खुशियाँ तुम्हें दे सकूँ, इस कोशिश मे लगा रहा
मेरे बचपन में थी जो कमियाँ, वो तुमको महसूस न हो।

हैं समाज का नियम भी ऐसा पिता सदा गम्भीर रहे
मन मे भाव छुपे हो लाखों, आँखो से न नीर बहे
करे बात भी रुखीसूखी-, बोले बस बोल हिदायत के
दिल मे प्यार है माँ जैसा ही, किंतु अलग तस्वीर रहे।

भूली नही मुझे हैं अब तक, तुतलाती मीठी बोली
पल पल बढते- हर पल मे, जो यादों की मिश्री घोली
कन्धों पे वो बैठ के जलता रावण देख के खुश होना
होली और दीवाली पर तुम बच्चों की अल्हड टोली।

माँ से हाथखर्च मांगना-, मुझको देख सहम जाना
और जो डाँटू ज़रा कभी, तो भाव नयन मे थम जाना
बढते कदम लडकपन को कुछ मेरे मन की आशंका
पर विश्वास तुम्हारा देख मन का दूर वहम जाना।

कॉलेज के अंतिम उत्सव में मेरा शामिल न हो पाना
ट्रेन हुई आँखो से ओझल, पर हाथ देर तक फहराना
दूर गये तुम अब, तो इन यादों से दिल बहलाता हूँ
तारीखें ही देखता हूँ बस, कब होगा अब घर आना।

अब के जब तुम घर आओगे, प्यार मेरा दिखलाऊंगा
माँ की तरह ही ममतामयी हूँ, तुमको ये बतलाऊंगा
आकर फिर तुम चले गये, बस बात वही दोहराउंगा
पिता का पद कुछ ऐसा ही हैं फिर खुद को समझाऊंगा।

➢ रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वि एवं प्रशा.)

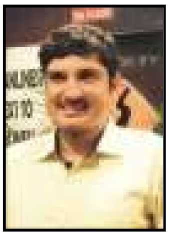

जीवन एक गुलदस्ता

जीवन एक गुलदस्ता है, खिलाएं भांति भांति के फूल
रहे प्रफुल्लित मन सदा, हटें राह से अनगित शूल।

जीवन एक गणित है, सूत्रों को हल करते जाएं
मित्रों को गले लगाएं, दुश्मनों से सदा दूर रहें।

जीवन एक परीक्षा है, पाठ्यक्रम को कभी ना बदलें
हल कर लें प्रश्न सभी, सदा समय से पहले।

जीवन एक बाजार है जिसमें सबसे महंगा ज्ञान
बेच लो जो बेचना बस, मत बेचना ईमान।

जीवन एक रणभूमि है, होते रहते छोटे बड़े युद्ध
खूब लड़ें हारे जीतें, करें न कोई भी मार्ग अवरूद्ध।

जीवन एक नदी है, मत रोको उसकी बहती धारा
वो ही पहुंचे मंजिल तक, जिसने संघर्ष पथ स्वीकारा।।

➢ लवली सूदन
कार्यकारी सहायक (वि. एवं प्रशा.)

माँ वो जो तुमको काबिल इंसान बना दे

माँ वो जो आपकी आपसे पहचान करा दे
माँ वो जो तुमको जीना सिखा दे।

तराशा हीरे की तरह तुमको
दुनिया के रास्तों पे चलना सिखा दे।

कर दे कायाकल्प वो तुम्हारा
सच और झूठ से साकार करा दे।

हमेशा दिखाए सच्चा मार्ग वो तुम्हें
तुम्हें एक अच्छा इंसान बना दे।

मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ जाओ तुम
तुम्हें वो इतना समझदार बना दे।

बताये वो तुम्हें जीत जाना ही सब कुछ नहीं
हारकर जीत जाने का हुनर सिखा दे।

माँ वो जो आपकी आपसे पहचान करा दे
माँ वो जो तुमको एक काबिल इंसान बना दे।।

➢ मो.शाहीद
स्टेशनरी इंचार्ज

अमरनाथ यात्रा का वृतांत

''अमर नाथ यात्रा स्वर्ग लोक की प्राप्ति तथा मोक्ष पाने का रास्ता''।

कुछ इसे स्वर्ग की प्राप्ति का रास्ता बताते हैं तो कुछ मोक्ष प्राप्ति का । लेकिन यह सच है कि अमरनाथ, अमरेश्वर आदि के नामो से विख्यात भगवान शिव के स्वंयभू शिवलिंग के दर्शन प्रत्येक पूर्णमासी को अपने पूर्ण आकार में होता है। अपने आप में दिल को स्कून देने वाले होते हैं क्योंकि इतनी लम्बी यात्रा करने तथा अनेक बाधाओं को पार करके अमरनाथ गुफा तक पहुंचना कोई आसान कार्य नहीं है। इसलिए प्रत्येक यात्री जो गुफा के भीतर हिमलिंगम के दर्शन करता है। अपने आप को धन्य पाता है और बहुत ही भाग्यशाली समझता है क्योंकि कई तो खड़ी चढ़ाईयों को देख कर ही वापस आ जाते हैं और कुछ तो भक्तगण आधे रास्ते से ही लौट आते हैं।

प्रत्येक वर्ष यह यात्रा श्रावण पूर्णिमा के दिन, जिस दिन देशभर में रक्षाबंधन का उत्सव मनाया जाता है उसी दिन अमरनाथ की गुफा में भगवान सदाशिव के दर्शन स्वंयभू हिमलिंग के दर्शनों के लिए हजारों यात्रीगण एकत्र होते हैं। यात्रा के दौरान अमरनाथ की अमरकथा के बारे में भी साधू संतो से पता चला है कि अमरकथा सुनने से शिवधाम की प्राप्ति होती है। ऐसा कहा गया है कि यह वह कथा है जिसको सुनने वालों को अमरपद की प्राप्ति होती है तथा वे अमर हो जाते हैं। यह कथा भगवान शंकर ने इसी गुफा में मां भगवती पार्वती को सुनाई थी, इसी कथा को सुनकर ही श्री शुकदेव जी अमर हो गए थे। जब भगवान शंकर मां पार्वती को यह कथा सुना रहे थे तो वहां एक कबूतर का बच्चा भी इस परम पवित्र कथा को सुन रहा था और इसे सुनकर मां पार्वती को नींद आ गई और यह पूरी कथा कबूतर ने सुन ली। इस कथा को सुनकर वह कबूतर का बच्चा भी शुकदेव जी की तरह अमर हो गया था।

यह यात्रा ''छड़ी'' मुबारक के साथ चली है, जिसमें यात्री एक बहुत बड़े जूलूस के रूप में अपनी यात्रा आरंभ करते हैं। इस यात्रा में अनगिनत साधू संत भी सम्मिलित होते हैं जो अपने हाथों में त्रिशूल और डमरू उठाए बम–बम भोले तथा जयकारा वीर बजरंगी हर–हर महादेव के नारे लगाते हुए बड़ी श्रद्धा तथा भक्ति के साथ आगे–आगे चलते जाते हैं। ''छड़ी मुबारक'' हमेशा श्रीनगर के दशनामी अखाड़ा से कई सौ साधुओं के साथ जूलूस के रूप में 140 कि.मी. की यात्रा पर रवाना होती है जिसका प्रथम पड़ाव पम्पोट, दूसरा पड़ाव बिजबिहारा में और दिन में विश्राम के बाद सांय का भोजन करने के बाद दूसरे दिन प्रातःपवित्र गुफा की ओर चल पड़ते हैं।

यह यात्रा प्रकृति की गोद में बसे पहलगाम से प्रारम्भ होती है और यह यात्रा पैदल ही की जाती है। इस यात्रा के दौरान हिमानी घाटियां बर्फ से ढके सरोवर, उनमें निकलती सरिताएं, फिर उन्हें पार करने के लिए प्रकृति द्वारा निमित बर्फ के पुल सब मिलकर प्रकृति का ऐसा अद्भूत खेल प्रकट होता है कि मानव इन सबको मंत्रमुग्ध होकर देखता ही रह जाता है। पहलगाम से श्रामवण पूर्णिमा से तीन दिन पहले, शिव की पवित्र छड़ी के नेतृत्व में ढोल, दमाकों और हर हर महादेव के जयकारे के बीच साधु संतो की टोलियों के साथ यात्रीगण अगले पड़ाव चंदनबाड़ी की ओर बढ़ते हैं। यह पहलगाम में लगभग 16 कि.मी. दूरी में स्थित है। यहीं पर जलपान करके तथा थोड़ा विश्राम करके श्रद्धालुओं आगे की कठिन चढ़ाई ''पिस्सू घाटी' की ओर चल पड़ते हैं।

चंदनबाड़ी से 13 कि.मी. की दूरी में शेषनाग नामक स्थान है। पिस्सू घाटी की कठिन चढ़ाई पार करके रात्रि में यही पर विश्राम करते हैं। यात्रीगण यहां बने हुए टेंटों में रात्रि में विश्राम करते हैं

तथा अगले दिन हिममिश्रित जल से स्नान करने के बाद आगे की यात्रा आरम्भ करते हैं। शेषनाग से 13 कि.मी. की दूरी में पंचतरणी नाम रमणीय स्थान आता है जो कि समुद्रतल से 14,800 फुट की ऊँचाई में स्थित है। यहां पर आक्सीजन की बहुत कमी है जिसके कारण सांस फुलने लगती है बहुत से यात्रीगण तो यहीं से वापस आ जाते है। यहां जगह जगह पर भारतीय सेना के जवान चिकित्सा संबंधी सहायता भी उपलब्ध कराते हैं। अमरनाथ यात्रा के दौरान यही सबसे कठिन स्थान है। दिन भर की थकावाट से यात्री यहीं पर रात्री विश्राम करते हैं और प्रातः काल यात्री पवित्र धाराओं में स्नान करके आगे की यात्रा की ओर बढ़ते हैं यहां से पवित्र गुफा मात्र 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

पंचतरणी से गुफा तक के मार्ग में पुनः दुर्गम चढ़ाई का सामना करना पड़ता है। सभी यात्रीगण सांस लेते, विश्राम करते और प्रभु भोले नाथ के दर्शनों की अभिलाषा लिए पवित्र गुफा की ओर बढ़ते हैं। रास्ता बहुत ही भयानक भी है और सुंदर भी, पगडंडी से नीचे आते ही खाईयों में बहती हिम नदी को देखकर बहुत डर लगता है। फिर गुफा के दर्शन होने पर लोग उत्साहित हो जय जयकारा करते बर्फ के पुल को पार करके पवित्र गुफा के नीचे बहती अमरगंगा के तट पर पहुंचते हैं, यहीं से स्नान करके यात्रीगण, साधूसंत लगभग 110 फुट चौड़ी तथा 150 फुट लंबी उस पवित्र गुफा में जाते हैं, जहां पर प्राकृतिक पीठ पर हिम निर्मित महादेव शिवलिंगम के रूप में विराजमान है जिनके दर्शनार्थ यात्री अपने आप को धन्य मानते हैं और यह लिंग चन्द्र की कलाओं के साथ घटता बढ़ता है। पूर्णिमा को पूर्ण और अमावस्य को विलीन हो जाता है। गुफा में माता पार्वती तथा गणेश जी के प्रतीक लिंग भी देखने को मिलते हैं। कहा जाता है कि आज भी पुण्य आत्माओं को यहां पर वह कबूतर दिखाई देता है जिसने वह अमर कथा सुनी थी जो भगवान सदाशिव ने माता पार्वती जी को इसी गुफा में सुनाई थी।

पहलगाम से यह यात्रा दो तीन दिन में पूरी की जाती है जबकि सोनमार्ग – बलटाल के रास्ते यह यात्रा एक दिन में ही पूर्ण कर ली जाती है पर यह रास्ता बहुत खतरनाक है। जगह–जगह पर रास्ते बहुत खराब है थोड़ा भी मौसम खराब वर्षा होने पर जमीन धसने का खतरा रहता है। पवित्र गुफा के दर्शन करने के बाद यात्रीगण कुछ वहीं रात्रि में विश्राम करते हैं कुछ उसी दिन वापस लौट आते है। इस यात्रा को पूर्ण करके अपने आप को मैं धन्य मानता हूँ। भगवान सदाशिव की कृपा ही थी जो यह यात्रा पूर्ण कर पाया।

- **नवीन जोशी**

कार्यकारी सहायक (पी– I)

काल (मृत्यु) से मित्रता

एक चतुर व्यक्ति को काल (मृत्यु) से बहुत डर लगता था। एक दिन उसे चतुराई सूझी और काल को अपना मित्र बना लिया। उसने अपने मित्र काल से कहा कि मित्र तुम किसी को भी नहीं छोड़ते, किसी दिन मुझे भी अपने साथ ले जाओगे। काल ने कहा कि ये मृत्यु लोक है। जो इस संसार में आया है, उसे एक दिन जाना ही है। सृष्टि का यह नियम है, इसलिए मैं मजबूर हूँ पर तुम मेरे मित्र हो इसलिए मैं जितनी रियायत कर सकता हूँ करूंगा तुम्हारे लिए। तुम मुझसे क्या आशा रखते हो साफ–साफ कहो, व्यक्ति ने कहा मैं इतना ही चाहता हूँ कि आप मुझे अपने लोक जाने के लिए अपने आने से पहले एक पत्र अवश्य लिख देना ताकि मैं अपने बाल बच्चों को कारोबार की सभी बातें अच्छी तरह समझा दूं और स्वयं भी भगवान भजन में लग जाऊँ।

काल ने प्रेम से कहा, यह कौन सी बड़ी बात है मैं एक नहीं चार पत्र भेज दूंगा, आप चिंता मत करो, चारों पत्रों के बीच समय भी ज्यादा दूंगा ताकि तुम सचेत होकर अपना सारा काम निपटा लो। व्यक्ति बड़ा प्रसन्न हुआ सोचने लगा कि आज मेरे मन से काल का भय भी दूर हो गया। जाने से पहले अपने सभी कार्य पूर्ण करके जाऊँगा तो देवता भी मेरा स्वागत करेंगे।

दिन बिताते गए और आखिर मृत्यु की घड़ी आ पहुंची। काल अपने दूतों सहित उसके समीप आकर बोला कि मित्र अब तुम्हारा समय पूरा हो गया है, मेरे साथ चलिए मैं सत्यता और दृढ़तापूर्वक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करते हुए एक क्षण भी तुम्हें और यहां नहीं छोड़ूंगा। व्यक्ति के माथे पर बल पड़ गया और बड़ी विनम्रता से कहने लगा, धिक्कार है तुम्हारी मित्रता पर मेरे साथ धोखा किया, तुमने वचन दिया था कि मुझे लेने आने से पहले पत्र लिखूंगा। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम बिना किसी सूचना अचानक अपने दूतों सहित मेर ऊपर चढ़ आए, मित्रता तो दूर रही तुमने अपने वचनों का भी पालन नहीं किया। यह असत्य बात है, मैंने आपको एक नहीं चार पत्र भेजे और आपने किसी का भी जवाब नहीं दिया। व्यक्ति ने चौंककर पूछा कौन से पत्र कोई प्रमाण है? मुझे पत्र प्राप्त होने की कोई रसीद है? तो सूनो..........मेरा पहला पत्र आपके सिर चढ़कर बोला आपके सारे काले बालों को श्वेत कर दिया यह भी कहा कि सावधान हो, जो करना है कर डालो। नाम, धन संग्रह के झंझटों को छोड़कर भजन में लग जाओ, मेरा पत्र आपके ऊपर कोई असर नहीं किया। बनावटी रंग लगाकर फिर से अपने काले बाल कर दिए। जवान बनने के सपनों में खो गए। आज तक मेरे श्वेत अक्षर आपके सिर पर लिखें हैं।

दूसरा पत्र मैंने आपके नेत्रों के प्रति भेजा नेत्रों की ज्योति मंद हो गई आंखों पर मोटे शीशे के चश्मे चढ़ाकर आप जगत को देखने का प्रयत्न करने लगे। दो मिनट भी संसार की ओर से आंख बंद करके ज्योतिस्वरूप प्रभु का ध्यान मन में नहीं किया। इतने पर भी आप सावधान नहीं हुए मुझे आपकी दिनदशा पर तरस आया मित्रता के नाते मैंने तीसरा पत्र भेजा। इस पत्र में आपके दांतों को छुआ और तोड़ दिए आपने इसका भी जवाब नहीं दिया और नकली दांत लगा लिए और जबरदस्ती संसार के भौतिक पदार्थों का स्वाद लेने लगे। मुझे बड़ा दुख हुआ में सदा इसके भले के लिए सोचता हूं और यह हर बात एक नया बनावटी रास्ता अपनाने को तैयार रहता है।

अपने अंतिम पत्र के रूप में मैंने रोग–क्लेश तथा पीड़ाओं को भेजा परन्तु आपने अहंकारवश इन्हें भी अनसुना कर दिया।

जब व्यक्ति ने काल के पत्रों को समझा तो फूट–फूट कर रोने लगा और अपने विपरित कार्यों पर पश्चाताप करने लगा। उसने स्वीकार कर लिया मैंने शुभ चेतावनी भरे इन पत्रों को नहीं पढ़ा। मैं सदा यही सोचता रहा कि कल से भगवान का भजन करूंगा, अपनी कमाई अच्छे शुभ कार्यों में लगाऊँगा पर वह कल आया ही नहीं। मेरे जीवन में व्यक्ति को जब अपनी बातों से काम बनना नजर नहीं आया तो उसने काल को करोड़ों की संपत्ति का लोभ दिखाया काल ने हंसकर कहा मित्र यह मेरे धूल से बढ़कर कुछ नहीं। धन, दौलत शोहरत जो कि लोभ संसारी लोगों को वश में कर सकते है, मुझे नहीं। व्यक्ति ने कहा क्या कोई ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हें प्रिय हो जिससे तुम्हें लुभाया जा सके । काल ने उत्तर दिया यदि तुम मुझे लुभाना चाहते हो तो सच्चाई और शुभ कर्मों का धन संग्रह करते रहो, ये ऐसा धन है जिसके आगे मैं विवश हो सकता हूं पर तुम्हारे पास यह धन किसी काम का भी नहीं है। तुम्हारे द्वारा सृजित धन, जमीन जायदाद, तिजोरी में भरा सोना सब यहीं छूट जाएगा मेरे साथ तुम भी उसी प्रकार निवस्त्र जाओगे जैसे कोई भिखारी की आत्मा जाती है। काल ने जब व्यक्ति की एक बात भी नहीं सुनी तो वह हाय–हाय करने लगा और रोने लगा। सभी परिवारजनों को पुकारा पर काल ने उसके प्राण ले लिए और चल पड़ा अपने गन्तव्य की ओर। काल ने कितनी बड़ी बात कही है कि एक ही सत्य जो अटल है वह है कि हम सब को एक दिन काल के पास जाना। हम जीवन में कितनी दौलत, शोहरत पाएंगे कैसी संतान होगी, यह सब अनिश्चित है व समय के गर्भ में छिपा होता है।

समय के साथ उम्र की निशानियों को देखकर तो कम से कम प्रभु की याद में रहने का अभ्यास करना चाहिए और अभी तो कलयुग का प्रथम चरण है और इसमें तो हर एक को चाहे छोटा हो या बड़ा सब को प्रभु की याद में रहकर ही कर्म करने है।

- **रामकृष्ण पोखरियाल**

निजी सहायक (वि एवं प्रशा)

काश जिंदगी सचमुच किताब होती

काश जिंदगी सचमुच किताब होती
पढ़ सकती मैं कि आगे क्या होगा?

क्या पाऊँगी मैं और क्या दिल खोयेगा
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा?

फाड़ सकती मैं उन लम्हों को
जिन्होंने मुझे रूलाया है।
काश जिंदगी सचमुच किताब होती

जोड़ती कुछ पन्ने जिनकी यादों ने मुझे हंसाया है
हिसाब तो लगा पाती कितना खोया और कितना पाया है।
काश जिंदगी सचमुच किताब होती।।

वक्त से आंखे चुराकर पीछे चली जाती
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाती
कुछ पल के लिये मैं भी मुस्कराती
काश जिंदगी सचमुच किताब होती।

➢ **नेहा कोहली**
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

एक दिन जब ऑफिस से घर के लिए निकला

एक दिन जब ऑफिस से घर के लिए निकला तो देखा करीब तीन घंटे से शुरू हुई बारिश अभी तक थमी नहीं, अपितु रूप इतना भयावह हो गया था कि अपने ऑफिस के निर्गम द्वार से पार्किंग में खडी कार तक पहुंचना ही कठिन डगर पर चलने के समान था। किन्तु हिम्मत दिखाते हुए मैं चीते की फुर्ती से अपनी कार में घुसा। बाहर का नाजारा डराने वाला था। हर ओर पानी ही पानी की याद आ जाये नानी। सड़को पर इतना पानी भरा था कि कावेरी नदी के पानी वितरण को लेकर जो झगड़ा है, वो उसी दिन समापत हो जाता। इतना सब देखने के बाद मैं डरा अपने घर की ओर चला। जगह–जगह कुछ लोग पेड़ के नीचे रूके थे, तो कुछ स्कूली बच्चे बारिश मे भीगते हुए , अपनी बाईकों से सड़क के पानी को चीरते हुए असीम आनन्द प्राप्त कर रहे थे इससे ज्ञात हुआ कि दुनिया में दो प्रकार के लोग होते है कुछ परिस्थिति की परवाह किए बिना अपने गन्तव्य की ओर बढ़ जाते हैं। पेड़ के नीचे खड़े लोगों की गिनती में दूसरे प्रकार के लोगों में ही कर रहा था कि मेरे तार्किक मस्तिष्क में एक विचार गूंजा हो सकता है, ये लोग अपनी सुरक्षा और स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा सजग हो सकता है, इनके पास ज्यादा समय हो और तब, तीसरे प्रकार का जन्म हुआ जिसमें वो लोग आते हैं जो परिस्थिति को भापकर /समझकर आगे बढ़ते हैं। इन लोगों के पास समय हो सकता है परन्तु उस दिन मेरे पास समय बिल्कुल ही नहीं था। मुझे अपने मेहमानों को रेलवे स्टेशन छोडना था जिनको शताब्दी से हिमाचल जाना था।

उस दिन मैं स्वयं को बहुत खुश किस्मत समझ रहा था क्योंकि उस दिन मैं लाया था अपनी नई कार अन्यथा हो जाता बारिश के आगे लाचार । इसी खुश किस्मती में, मैं अपनी कार को दौडाते हुए जा रहा था कि आगे देखा तो सड़क अपनी जगह पर नहीं थी अपितु सामने नदी बह रही थी देखा कि पानी ही पानी था। समय की मांग को देखते हुए मैने अपनी नाव अर्थात कार को मोड़ा और घर जाने के दूसरे मार्ग पर चल पड़ा जो बेहद खराब रास्ता था। जैसे तैसे में अपनी कॉलोनी के अंदर प्रविष्ट हुआ इतने में सामने से आती हुई कार से मेरी कार का संतुलन बिगड़ा, परिणामस्वरूप मेरी कार का बायीं ओर का पहिया गली की नाली में जा फंसा। एक ओर मैं कार निकालने का प्रयास कर रहा था। दूसरी ओर शताब्दी का भी समय निकला जा रहा था मैंने स्वयं प्रयत्न किया पहिया निकालने का मगर मुझे सफलता नहीं मिली तभी कुछ युवक जो गली में टाईम पास कर रहे थे। मेरे पास आये और मदद का प्रस्ताव दिया। लेकिन मैने मना कर दिया कि ये आवारा लड़के कहीं मेरी नई कार न बिगाड़ दे । मैंने खुद कोशिश की पहिए को निकालने की मगर विफल रहा। दूर–दूर तक उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही थी। तभी मैंने उन्हीं लड़कों से मदद लेनी चाही उसमें से एक नाम परमेश्वर था जो कार चालक था उसने मुझे आश्वस्त किया कि मेरी कार पर कोई खरोच नहीं आयेगी। उसने बताया कि वह पहले भी दो–तीन फंसी हुई कारों को निकाल चुका है। तभी मेरे मोबाईल पर घर से फोन आने लगे। तभी हारकर मैंने अपनी गाड़ी की चाबी उसे पकड़ा दी । उस लड़के ने थोड़े से प्रयास में ही मेरी कार का पहिया नाली से निकाल दिया। मैने उसे धन्यवाद दिया और स्टेशन की ओर बढ़ चला।

उस दिन की छोटी से घटना से शक नहीं कई सीख मिली– परिस्थिति के अनुसार दूसरों की मदद लेने /स्वीकार करने में हिचक नहीं होनी चाहिए। किसी की वेशभूषा से उसकी योग्यता का आकलन नहीं कर सकते । अति आत्मविश्वास से बचना चाहिए और दूसरों पर विश्वास करना चाहिए।

➢ **रोहित कुमार**
निजी सहायक (तकनीकी)

मनमौजी मोटा

वजन है अपना सौ से ऊपर
काया भी बलशाली है,
अपने पराये कहते मोटा तोंदू।
ना लगती मुझे कोई गाली है,
सभी कहते मीठा ना खाओ
दौड़ लगाओ वजन घटाओ।
बड़ा वजन दुखशाली है।
कोई कहे इससे होता शुगर
और होती सभी बीमारी है।
मैं रहता मनमौजी जैसा
जो मन करता खाता हूँ।
मोटा हूँ पर इंसान हूँ मैं
मोटा होना कोई पाप नहीं
जो मुझपे सारे हँसते हैं
मैं उनका खून बढ़ाता हूँ
बीवी अपनी सुख–दुख की साथी।
सभी भारतीय नारी की भांति
सुबह खिलाएं दही पराठी
मैं खाकर अपनी तोंद बड़ाता हूँ।
मैं रहता मनमोजी जैसा
जो मन करता खाता हूँ
जो मन करता खाता हूँ।

➢ **संजय चौहान**
संदेश वाहक

''जाको राखे साईंया मार सके ना कोई''

एक वृक्ष पर दो पक्षी आनंद से बैठे थे। अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे उन्हें कुछ भी पता नहीं था। आसमान में मंडरा रहे एक गिद्ध ने मासूम पंछियों को देख लिया था दूसरी ओर एक शिकारी की दृष्टि भी उन मासूम पंछियों पर जा टिकी थी शिकारी भी उनका शिकार करना चाहता था। उसने एक पेड़ की ओट ली और अपना तीर कमान पर चढ़ाया और कमान खींची और जिस पेड़ की ओट में शिकारी खड़ा था उसकी जड़ में बनी बांबी ने उन पक्षियों का हितैषी एक बूढ़ा सांप रहता था जैसे ही उसने शिकारी को कमान खींचते देखा वह फौरन बांबी से निकला उसने आव देखा न ताव और फौरन ही शिकारी के पैर को काट लिया। दरअसल वह सांप काफी बूढ़ा हो चुका था उसके शरीर में जान नहीं बची थी दोनों मासूम पंछी जंगल में घूम–घूम कर उसके लिए खाना लाते और बांबी के मुंह पर छोड़ देते। सांप यह जानता था अतः वह दोनों मासूम पंछियों को पिता जैसा प्यार करता था और जब सांप ने पंछियों की जान को खतरे मे देखा तब उसने शिकारी को काट लिया। उधर शिकारी सांप के द्वारा काट लिए जाने पर बुरी तरह बिलबिलाया। उसका निशाना भटक गया और तीर आकाश में उड़ रहे गिद्ध को जा लगा शिकारी और गिद्ध दोनों ने ही प्राण त्याग दिए और मासूम पंछियों को पता तक नहीं चल पाया कि पलभर में क्या से क्या हो चुका था। इसलिए दूसरों का भला करने वालों का भला ही होता है सहयोग में शक्ति और सुरक्षा है।

➢ **मनोज सिंह बिष्ट**
ऑफिस बॉय

मानव एवं मेहनत का मूल्य

एक गांव में श्याम नाम का एक व्यक्ति रहता था। जो अपनी गरीबी के कारण अपने जीवन से इतना तंग हो गया कि उसे अपना जीवन ही अभिशाप लगने लगा था। जिसके कारण उसके मन में अपने जीवन को ही समाप्त करने के विचार आने लगे। दिन–रात वह भगवान को कोसने लगा कि भगवान ने उसे कुछ नहीं दिया। दुखी होकर वह एक महात्मा के पास जा पहुंचा और उन्हें अपनी समस्या बताई। उसकी बात सुनकर महात्मा ने कहा ये तो कोई बड़ी समस्या नहीं। पास ही के गांव में एक बड़ा उदार दिल सेठ है, वह तुम्हारी समस्या अवश्य ही दूर कर पाएगा। यह सुनते ही वह व्यक्ति बड़ी ही उम्मीद के साथ उस सेठ के पास जा पहुंचा, और सेठ के पास जाकर अपनी दुखभरी व्यथा सुनाई। सेठ बड़ा ही ज्ञानी पुरूष था, उसने उस व्यक्ति के हृष्ट–पुष्ट शरीर को गौर से ऊपर से नीचे देखा और कहा कि अगर तुम मुझे अपने दोनों हाथ दे दो, तो में तुम्हें दो लाख रूपये दे सकता हूं। जिससे तुम्हारी समस्या का समाधान हो जाएगा। व्यक्ति ने तुरंत कहा नहीं–नहीं ये कैसे हो सकता है, मैं अपने हाथ नहीं दूंगा। सेठ ने फिर कहा अच्छा हाथ नही ंतो पैर ही दे दो, तुम्हे चार लाख मिल जाएंगे। व्यक्ति नहीं कहा कभी नहीं। सेठ ने आगे कहा कि ठीक है मैं तुम्हें दस लाख रूपये देने को तैयार हूँ। अगर तुम मुझे सिर्फ अपने आंखे दे दो तो इस पर व्यक्ति बोला आप ये कैसी बात कर रहे है। आंखों के बिना तो जीना बहुत कठिन है।

अब सेठ ने उसे समझाया भाई जब तुम्हारे पास 2 लाख के हाथ, 4 लाख के पैर और 10 लाख की आंखे है तो तुम गरीब कैसे हुए। तुम्हारे पूरे शरीर की कीमत करोड़ों में है। जाओ मेहनत करो तुम्हें सफलता मिलेगी। ये सब सुनकर उस आशाहीन व्यक्ति को एक आशा की नई किरण मिल गई और उसे अपने जीवन का मूल्य पता चला।

➢ रेनू शर्मा
कार्यालय सहायक (वि एंव प्रशा)

भारत प्रगति के पथ पर

इक्कीसवीं सदी में भारत विश्व में एक शक्ति के रूप में उभर रहा है। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति की है। जैसे सामाजिक अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक अविष्कार, सांस्कृतिक रूप में समृद्धि, शिक्षा के क्षेत्र में विकास, खेती के उन्नत तरीके, चिकित्सा के क्षेत्र आदि कई क्षेत्र में जिसमें हम आगे बढ़ चुके हैं।

आज हमारे देश का प्रत्येक विभाग कम्प्यूटर पर कार्य करता है और किसी भी जानकारी को आप इसके माध्यम से आदान–प्रदान कर सकते हैं सभी सूचनाएं इसी पर उपलब्ध हो जाती है, इसके अंतर्गत ई–कॉमर्स भी शामिल है जिसके द्वारा घर बैठे बैठे अपना सामान कम्प्यूटर पर खरीद या बेच सकते हैं।

रक्षा उपकरणों के क्षेत्र में भी भारत निरंतर आगे बढ़ रहा है। तीनों सेनाओं की रक्षा उपकरण हमारे पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। हाल ही में सबसे कम वजन का लड़ाकू विमान बनाने में हमने सफलता प्राप्त की है।

चिकित्सा के क्षेत्र में हम प्राचीन काल से अव्वल रहे हैं परन्तु उपकरणों के अभाव में हम पिछड़ गये थे परन्तु आज स्थिति कुछ और है । हमारे देश में आज लगभग सभी बीमारियों के इलाज उपलब्ध हैं और उनकी जांच के लिए सभी मशीनों की भी व्यवस्था देश में उपलब्ध कराई गई है।

विज्ञान के क्षेत्र में भी भारतीय वैज्ञानिकों ने सफलता के कई परचम लहराए हैं। आज भारत अंतरिक्ष में उपकरण स्थापित कर रहा है। दिन प्रतिदिन नई टैक्नोलॉजिस से लोगों के जीवन स्तर में बहुत सुधार हुआ है। मेट्रो रेल ने देश में एक नई क्रांति ला दी है। हमारे इस बदलते हुए भारत में एक ओर देश प्रगति की ओर बढ़ रहा है वहीं कई समस्याएं भी हमारे सामने खड़ी हैं। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण जैसे बहुत से प्रदूषण हो रहे हैं जिससे लोगों को शुद्ध वायु नहीं मिल पा रही। बढ़ती जनसंख्या हमारे सामने दूसरी बड़ी समस्या है। हमारे देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है इसकी कारण हम लोग योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते। इस बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा हमारी समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती रहेंगी।

भारत ने पिछले कुछ दशकों में तेजी से हर क्षेत्र में प्रगति देखी है। हाल ही में भारत के प्रधनमंत्री ने स्वचछ भारत की मुहीम चला रखी है। स्वच्छ भारत न सिर्फ भारत सरकार का एक सार्थक प्रयास है। बल्कि सभी भारतीयों की एक नैतिक जिम्मेदारी भी है। भारत आज प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहा है, पूरे विश्व की नजर आज भारत की ओर है, कुछ कमियां दूर करनी है जिसे मिलकर एक जुट होकर सुधारना होगा।

चलो मिल कर बनाते हैं अपने भारत को सबसे बेहतर और ले चलते हैं प्रगति के पथ पर सबसे आगे।

➢ मोहित माथुर
कार्यकारी सहायक(तकनीकी)

''इंजीनियर''

पढ़ा लिखा जो विज्ञान (साइंस) में,
फिर इंजीनियर (अभियन्ता) ही बनना है,
हर माँ–बाप की बस यही तमन्ना है।

अपने कुल का झण्डा सबसे ऊँचा करना है,
भाई–बहनों से भी अपने आगे हमको बढ़ना है।
दसवीं कक्षा से ही होती शुरू है अपनी बैटल,
विदेश जाकर ही आखिर सबको होना है सैटल।
तकनीकी प्रगति में लिखना अगला पन्ना है,
हर माँ–बाप की बस यही तमन्ना है।

बी.टेक. है या कोई वाइरस या है कोई बीमारी,
एक फुटबॉल के पीछे पड़ी है दुनिया सारी।
मशरूम से खुलते कॉलेज, शहर – गली – मोहल्ला,
आई.आई.टी. में हो जाए दाखिला, मन चाहे यही सबका।
इंजीनियरिंग का घोड़ा अस्सी–नब्बे वाले दौड़ाएं,
50 प्रतिशत वाले भी गड़ाए है निगाहें।
चाहे हो जो भी, ताज इंजीनियरिंग का ही पहनना है,
हर माँ – बाप की बस यही तमन्ना है।

बादाम अखरोट से होगा क्या?
भौतिक – रसायनिक (फिजिक्स–कैमिस्ट्री) लगाओ,
गणित है महासंकट, हे बजरंगबली बचाओ।
कर लो जाप सभी तुम, चाहे संगम में नहाना,
पप्पू होना पास, तो डेरी – मिल्क हमें भी खिलाना।
बिन मनोंरंजन के जूस, विद्यार्थी एक सूखा गन्ना है,
हर माँ – बाप की बस यही तमन्ना है।

सबकी कटोरी में प्लेसमेंट का सिक्का कैसे आए?
डिसप्लेसमेंट से बेहतर है, एम. बी. ए. में घुस जाएं,
नोंक जिनकी अब भी है शॉर्प, एम.टेक. में रंग जमाएंगे,
और बाकी ठहरे सब कम से कम इंजीनियर तो कहलाएंगे,
नहीं हुआ फिर भी कुछ तो शादी में धूम– धड़ाका होना है,
हर माँ – बाप की बस यही तमन्ना है।

इंजीनियरिंग करि–करि, जग मुआ, सफल भया ना कोए,
मन से काज जो भी किया सफलता चरणम् धोए।
हो इंजीनियर सा हुनर तो ही इस ओर आना,
सिर्फ डिग्री वाले इंजीनियर बन, मत देश का नाम डुबाना।
जैसी हो प्रतिभा वैसा ही अब बनना है,
हर माँ–बाप की बस यही तमन्ना है।

➢ अमित कुमार पाण्डेय
युवा सिविल अभियन्ता

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास का अर्थ होता है कि आप जो भी कार्य करते हैं उस पर भय का कोई नियंत्रण नहीं होता जब आप डर के आगे हथियार डाल देते हैं तो आपके आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अच्छी तरह कार्य करने से आत्मविश्वास का संचार होता है। जिस चीज़ से आपको डर लगता है यदि आप उसी चीज़ का सामना बहादुरी और बिना किसी भय से करें तो वह आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने में आपकी मदद करेगा। इसीलिए जिस भी चीज़ से आपको डर लगे उसका सामना जरूर करना चाहिए क्योंकि डर को टालने की प्रवृति आपके आत्मविश्वास को कम कर सकती है।

आत्मविश्वास में वह अद्भुत शक्ति होती है के जिससे मानव हजारों मुसीबतों का सामना अकेला कर सकता है। महान कार्यों को करने के लिए आत्मविश्वास सबसे अहम होता है आत्मविश्वास इंसान को काम करने की शक्ति प्रदान करता है। आत्मविश्वास की कमी वाला इंसान नकारात्मक सोच वाला बन जाता है आत्मविश्वास पैदा करने के लिए सबसे जरूरी होता है कि हमें स्वयं के महत्व को जानना चाहिए कोई इंसान जन्म से ही आत्मविश्वास लेकर नहीं पैदा होता हमारा स्वयं का व्यक्तित्व , मन मस्तिष्क व् जीवन को प्रभावित करने वाले कारक ही हमारे आत्मविश्वास को घटाने और बढाने का काम करते हैं।

आत्मविश्वास का प्रभाव केवल मानव जाति पर ही नहीं देखा जा सकता बल्कि पशुओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है दौड़ में अव्वल आने वाले घोड़े की अगर पीठ ना थपथपाई जाए तो वह भी आत्मविश्वास खो देता है और अगली दौड़ में उसकी चाल धीमी पड़ जाती है। आत्मविश्वास की शक्ति मुश्किलों के समय आपको सुख का आभास करवाती है। इसके विपरीत उत्साह की कमी और कमज़ोर इच्छा शक्ति आप के आत्मविश्वास पर बुरा असर डालती है इसीलिए इनसे दूर ही रहें।

आत्मविश्वास का धनी इंसान समय पर पके हुए फलों को खाता है और उनके बीज से पुन :फ़ल उत्पन्न करता है। इस संसार में जो इंसान आत्मविश्वास खो बैठता है वह वहीँ का वहीँ रह जाता है सफलता उससे कोसों दूर भागती है। अपने आत्मविश्वास के बल पर ही शिवा जी ने अपने कुछ मराठों सेनिकों के साथ औरंगजेब की सेना को भागने के लिए मजबूर कर दिया था। आत्मविश्वास तो बड़े- बड़े पहाड़ों को हिला देने वाली शक्ति का नाम है जिसके मन में आत्मविश्वास भरा हो उसके सारे सपने और इच्छाएं सम्पूर्ण हो जाती है। इसीलिए असफलता मिलने पर भी अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए इसे अपने मन में बनाये रखें देखना एक दिन आप जरूर सफल होंगे।

अपने अंदर का विश्वास ही किसी व्यक्ति के लिए सफलता का मार्ग खोलता है। अगर आपके पास सारा संसाधन, क्षमता, योग्यता आदि हो लेकिन उसके ऊपर आपका विश्वास नहीं हो, तो सफलता आपसे उतनी ही दूर है, जितनी दूर समुद्र के किनारे बैठे व्यक्ति से मीठा पानी।

हालांकि, हर तरह के अभावों के बावजूद अगर किसी व्यक्ति के अंदर अपने को साबित करने का विश्वास है, यानी वह आत्मविश्वास से लबरेज है, तो उसे कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता। आत्मविश्वास एक ऐसा मंत्र है, जिसके आगे सारे संकट दूर हो जाते हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति वाले के सामने मुसीबतों का पहाड़ भी सपाट मैदान की तरह बन जाते हैं और जिनके पास इसकी कमी होती है वह छोटी-मोटी समस्याओं से भी इतने घबरा जाते हैं कि उससे

बचने के उपाय ढूंढ़ते-ढूंढ़ते खुद ही अपने आस पास के लोगों के लिए मुसीबत बन जाते हैं। इतिहास गवाह है कि कई लोगों ने केवल अपने आंतरिक ताकत के बल पर ही साम्राज्य कायम किया, नहीं तो एक सामान्य से मुखिया के घर में पैदा हुआ चंद्रगुप्त मौर्य कभी सम्राट नहीं बनता।

आत्मविश्वास से जुड़ी एक सच्ची कहानी बिहार के दशरथ मांझी की है जिन्हें आज संसारभर में माउंटेन मैन के नाम से भी जाना जाता है जिसने आत्मविश्वास के बलबूते पर ही लोगों की परवाह ना करते हुए अकेले ही 22 वर्ष तक पहाड़ में रास्ता बनाने का कार्य किया और अंत कड़ी मेहनत से उन्होंने एक बड़े पहाड़ के बीच 30 फीट चौड़ा रास्ता बना दिया किसी दिन दशरथ मांझी का मजाक बनाने वाले गाँव के किसी भी आदमी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि लोक कल्याण से भरे इस असंभव कार्य को संभव करने के बारे में सोच भी सके। दशरथ मांझी ने अपने आत्मविश्वास के बल पर ही इतने बड़े पहाड़ को खोदकर रास्ता बना दिया जिसकी सराहना आज सारी दुनिया करती है।

वर्तमान समय में भी राजनीति से लेकर व्यवसाय तक कई उदाहरण पड़े हैं, जिसमें कई सामान्य लोगों ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विश्व के अधिकांश महानतम व्यक्ति चाहे वो गांधीजी हों या कोई और, सभी के जीवन की शुरुआत साधारण तरीके से हुई, कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए उन्होंने अपने जीवन का सफर शुरू किया लेकिन आत्मविश्वास की दृढ़ता की वजह से ही कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए वैश्विक मानव की श्रेणी में पहुंचे। कई मौकों पर उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा, कठिन परिस्थितियों से जूझना पड़ा लेकिन उन्होंने आत्मविश्वास को डिगने नहीं दिया और एक दिन सफलता की विजय गाथा लिखी। इसलिए कामयाबी के लिए आत्मविश्वास यानी अपने ऊपर विश्वास होना सबसे अहम है।

- **रेखा**

कार्यालय सहायक (पी-I)

भ्रूण हत्या कारण एवं निवारण

जन्म से पहले ही भ्रूण हत्या विज्ञान की देन है। पुरुष प्रधान समाज में पहले लड़की को जन्म के बाद मारा जाता था। कन्या के जन्म लेने के तुरंत बाद उसे अफीम चटाकर, गर्म पानी में उलटा लटकाकर, आक का जहरीला दूध पिलाकर, गला घोंटकर या फिर ऐसी ही दूसरी विधियों से मारने के किस्से पुराने नहीं हुए हैं। इन सारी परिस्थियों के मद्देनजर क्या एक बात मथती नहीं कि उस शिशू का क्या दोष है जिसकी वजह से अल्ट्रासाउंड के जरिए पहले ही उनके लिंग का पता लगाकर जन्म लेने से पूर्व ही जिसे मार दिया जाता है। यह उस देश की स्थिति है जो एक धर्म प्रधान देश है, जिसे अहिंसा एवं आध्यामिकता प्रेमी और नारी मां पर गर्व करने वाला देश माना जाता है। भारतीय समाज मेंगरि गौरव 100 के मुकाबले महिलाओं का प्रतिशत 93 से कुछ कम है । गर्भधारण पूर्व व प्रसव पूर्व निधान तकनीकअधिनियम (लिंग चयन प्रतिषेध), 1994 के अंतर्गत गर्भधारण से पूर्व या बाद में लिंग चयन या बाद में कन्या भ्रूण हत्या करना कानूनी अपराध घोषित किया गया है। गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम, 1971 के अनुसार निम्नलिखित परिस्थितियों में एक महिला गर्भपात करवा कर सकती है:1. जब गर्भ की वजह से महिला की जान को खतरा हो 2. महिला के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को खतरा हो 3. गर्भ बलात्कार के कारण ठहरा हो 4. बच्चा गंभीर रुप से विकलांग और अपाहिज पैदा होने का खतरा हो 5. महिला और पुरुष द्वारा अपनाया गया परिवार नियोजन का साधन असफल हो गया हो । आईपीसी की धारा 313 के तहत स्त्री की सहमति के बिना गर्भपात करने के बारे में कहा गया है कि इस प्रकार से गर्भपात करवाने वाले को आजीवन कारावास और जुर्माने से भी दंडित किया जा सकता है। धारा 314 के अंतर्गत बताया गया है कि गर्भपात करने के आशय से किए गए कार्यों द्वारा कारित मृत्यु में दस वर्ष का कारावास या जुर्माना या दोनो से दंडित किया जा सकता हैं मगर यदि गर्भपात स्त्री की मर्जी के खिलाफ कराया गया हो तो आजीवन कारावास होगा । धारा 315 के अंतर्गत बताया गया है कि शिशु को जीवित पैदा होने से रोकने या जन्म के उपरांत उसकी मृत्यु कारित करने के कार्यों से संबंधित अपराध में दस वर्ष का कारावास या जुर्माना या दोनो हो सकता है । वर्तमान में देश में असंख्य अलट्रासाउंड स्कैनिंग सैंटर और सोनोग्राफी सैंटर हैं। सभी के सामने यहां लिंग निर्धारण परीक्षण नहीं होता है का तख्ता लटका रहता है। भ्रूण हत्याओं को नियंत्रित करने के लिए सरकार की ओर से जुर्माने तथा कैद का कानून बनाया गया है । भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सरकार ने बड़ी तेजी से अभियान चलाया हुआ है। प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया व जगहजगह होर्डिंग्स लगाकर- लोगों को व उनसे बने समाज को जागरुक करने की भरसक कोशिश हो रही है। 11 वीं पंच वर्षीय योजना में भ्रूण हत्या को रोकने के लिए रोडमैप तैयार हुआ था । पालना घर बनाकर नवजात बच्चियों की परवरिश, शिक्षा का पूरा खर्च वहन करने की योजनाएं बन चुकी हैं। लाल किले की प्राचीर से 60वें स्वतंत्रता दिवस के समारोह के अवसर पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए डॉ मनमोहन सिंह के भाषण में महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता व कन्या भ्रूण हत्या के बारे में प्रतिवचन, इस मामले में केंद्र सरकार की गंभीरता को दर्शाते हैं । केंद्र सरकार तो भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाने के लिए स्कूली छात्राओं की मदद भी चाह रही है। जागरुकता कार्यक्रम में लगी बच्चियों की पढ़ाई बाधित होने के एवज में अतिरिक्त अंक दिए जाते हैं लेकिन फिर भी किलकारियां

निकलने से पहले ही मारी जा रही हैं बच्चियां। बुद्धिजीवी, शिक्षाविद, समाज सुधारक तथा कानूनविदों के सभी प्रयास निरर्थक साबित होते हैं जब आज भी लड़की का जन्म परिवार वालों के चेहरे पर चिंता की लकीरें खींच देता है। पुत्र मोह में पगलाए लोग अपना देश छोड़ कर विदेश तक का रुख करते हैं जिससे गर्भपात व्यापार फलफूल रहा है । लिंग चयन इलाज में महारत हासिल लास एंजल्स के एक फर्टिलटी विशेषज्ञ जैफरी स्टीनबर्ग ने एक बार कहा था कि हर महीने करीब दो भारतीय उनके फर्टिलिटी केंद्र में इलाज हेतु आते हैं और उनमें से अधिकतर की मांग नर भ्रूण यानी बेटे की होती है। इन्हीं वैज्ञानिक तकनीकों के दुष्परिणाम का नतीजा है कि भारत के कुछ गांवों में बारात नहीं आती।महिला के छह रुप बताए गए हैं । कामकाज में मंत्री के समान सलाह देने वाली, कार्य करने में दासी के समान सेवा करने वाली, शयन में अपसरा के समान सुख देने वाली, धर्म के अनुकूल चलने वाली, क्षमा आदि गुण धारण करने में पृथ्वी के समान स्थिर रहने वाली। नारी में धैर्य, साहस, सहनशीलता, दृढ़ इच्छा शक्ति जैसे ऐसे गुण हैं जो ईश्वर प्रदत्त हैं। मनुष्य के लिए कभी वह मातृ स्वरुपा तो कभी प्रेयसी, कभी बहन तो कभी पत्नी रुपा बन उसका साथ देती है। देवासुर संग्राम में दशरथ को कैकई के रण कौशल ने ही विजयी बनाया था तथा मांगार्गी, मैत्रयी, विद्योतमा आदि के रुप में नारी सम्मानीय है । आदर्श नारी का समाज में सर्वोच्च स्थान रहा है। समाज तथा देश की कल्याणकारिणी के रुप में वह सम्मान पाती रही है। वीर व साहसी पुत्रों की जननी होने पर उसे वीर प्रसूता कहा जाता है लेकिन परतंत्रता के साथ नारी का पतन प्रारंभ हुआ। उसकी सेवा भावना पुरुष के लिए दासी का पर्याय बनकर रह गई और वह घर की चारदीवारी में कैद कर दी गई। सभ्यता के आरंभ से ही पुरुष ने अपने शारीरक बल के गुमान पर महिलाओं के ऊपर रौब जमाया हुआ है। इसी के बल पर परदा, दहेज और सती प्रथा जैसी रुढ़ीवादी विचारधाराएं समाज में विद्यमान हैं। इसमें कोई शक नहीं कि बतौर मां, बहन और बेटी महिला का महत्वपूर्ण किरदार है किंतु बात जब जन अधिकारों की आती है तो वे उसके पास नहीं हैं। यह सब इसलिए ही है कि पुरुष महिलाओं को बराबर का भागीदार नहीं बनाना चाहता। महत्वपूर्ण मसलों जैसे जायदाद की बांट और राजगद्दी प्राप्ति के मामलों में लड़कों को ही प्राथमिकता मिलती है। शादी के बाद उसका मां बाप की जायदाद में से हिस्सा समाप्त मान लिया जाता है। उसके नाम के आगे पति के नाम का उपनाम लग जाने के परिणाम स्वरुप उसकी रही सही पहचान भी समाप्त हो जाती है। मुस्लिम समाज के बारे में कहा जाता है कि पुरुषों का वर्चस्व बहुत ही ज्यादा है। वे चार पत्नियां रख सकते हैं, तीन बार तलाकतलाक शब्द का उपयोग -तलाक- करने पर अपनी पत्नी को तलाक दे सकते हैं। कुछ देशों में तो वे मतदान के अधिकार से भी वंचित है। न्यायालयों में उसकी गवाही भी मान्य नहीं होती। कुछ क्षेत्रों में तो उसके साथ दूसरे दर्जे के नागरिकों वाला बर्ताव होता है। मगर मुस्लिम बुद्धिजीवियों का दावा है कि स्त्री पुरूष अनुपात उनके धर्म में बराबर है, दहेज के लिए हत्याएं भी नहीं होतीं तथा पत्नियों को जलाकर मारा नहीं जाता। दूसरी तरफ अधिकतर मामलों में मादा बच्चे के जन्म पर खुशी नहीं मनाई जाती। यह भेदभाव जन्म से लेकर उसकी खुराक, शिक्षा एवं पालन पोषण तक रहता है। संयुक्त एवं रुढ़ीवादी परिवार की विचारधाराएं मादा भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण रहीं हैं। सड़े गले संस्कारों के तहत बेटा मुक्ति का मसीहा बनकर जब तक चिता को आग नहीं देगा, आत्मा मुक्त नहीं होगी। बुढ़ापे का सहारा है। कुछ परंपराओं को मानने से भी भ्रूण हत्या दर में बढ़ौतरी होती है। भारत में परिवार की सहमति से की गई शादियों की सफलता प्रेम विवाह से की गई शादियों की सफलता दर से ऊपर है। प्रेम प्रसंग की असफलता भी भ्रूण हत्या का कारण बन सकती है।

अवैध संबंध और बलात्कार जैसी कुरीतियां भी भ्रूण हत्या के प्रतिशत को बढ़ाने में सहायक हैं। पूर्व में डॉक्टरों का व्यवसाय समाज की सेवा के लिए जाना जाता था किंतु अब इसके अभिप्राय बदल गए हैं। जिसके लिए रुढ़ीवादी समाज ही जिम्मेदार है। किसी समय डॉक्टरों को भगवान का रुप मानकर पूजा जाता था। गरीबों और मरीजों का इलाज ही उनका मिशन होता था। आजकल डॉक्टर भौतिक सुख-सुविधाओं और संपत्ति के दूत का काम कर रहे हैं व धन कमाने की लालसा में भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराधों में शामिल हो रहे हैं । सरकारें तो इस सामाजिक बुराई को समाप्त करने में सहयोग देने वालों को नईनई सुविधाएं दे- रही हैं। एक तरफ भारत सरकार का बेटी बचाओ -बेटी पढ़ाओ अभियान है, वहीं दूसरी ओर एक ऐसी डॉक्टर कानून की गिरफ्त में फंसी है जो चलती कार में भ्रूण हत्या का कारोबार चला रही थी। भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने के लिए सामाजिक तानेबाने में फंसी रुढ़ीवादी सोच -बदलने के लिए धर्म गुरुओं और धार्मिक चैनलों का योगदान मील का पत्थर साबित हो सकता है। संयुक्त परिवार की विचारधारा गांवों व शहरों में लगभग समाप्त हो चुकी है। जबकि गांवों में जमीन कम होने की वजह से ग्रामीण रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं व शहरों में न्युक्लियस परिवार पद्धति पाई जाती है, जहां शादी के बाद बच्चे अलग स्वतंत्र जीवनयापन के लिए चले जाते हैं। संयुक्त परिवारों की टूटने के बाद बेटा मां बाप की सेवा करेगा, यह विचारणीय पक्ष समाज के सामने लाना आवश्यक है। भ्रूण हत्या के मामले में कानूनी खामियां दूर करके इसे और अधिक सख्त बनाना भी बहुत जरूरी है। भ्रूण हत्या में संलिप्त दोषियों के लिए सख्त से सख्त सजा का प्रावधान व पुरूषों और महिलाओं के अनुपात में बराबरी लाने में साहयक नागरिकों के लिए पुरस्कार ही आज के समय की मांग है।

- **प्रदीप चित्तौड़**

लेखापाल (वि. एव प्रशा)

खुशी

खुशी के कारण बहुत मिलेंगे,
कभी किसी की खुशी का कारण बनो।
जो बांटोगे वही मिलेगा,
दुख बांटो या सुख बांटो।

प्रेरणा दूसरों के जीवन की बनो,
लेकर सबको साथ चलो
जब साथ एक दूजे का होगा
तो कोई दुख पास न ठहरेगा

खोलो इंसानियत का खाता,
जिस खाते में हो प्यार भरा।
लुटाओ ये प्यार फिर दुनिया पर,
फिर जीवन में भरता रहेगा प्यार सदा

जब सब आपस में प्यार करें,
और सब आपस में मिलकर रहें।
स्वर्ग यही है जीवन का,
फिर कोई डर दिलों में न रहे।

जब समाज में रहना है हर इंसान को
तो क्यों न ये समाज उन्नति करे
सब जगह प्रेम और त्याग की भाषा हो,
मिलजुलकर रहें और आगे बढ़े।

ऊंच नीच का न भेद करो
हर इंसान में हैं रब बसा
सोच ये जब सब में आ जाएगी
स्वर्ग बन जायेगी ये धरा।

खुशी के कारण बहुत मिलेंगे,
कभी किसी की खुशी का कारण बनो।
जो बांटोगे वही मिलेगा,
दुख बांटो या सुख बांटो।

➢ पवन
स्टोर अटैंडेंट

पत्थर के रूप

मैं पत्थर हूँ इसलिए चुप रहता हूँ,
मै पत्थर हूँ इसलिए सब सहता हूँ
पैर की ठोकर, पानी की धार
टूटने तक हथौडों का, निरंतर प्रहार।

ऐ शिल्पकार, तुझे नमन
गढ़े है तुमने मुझसे, कितने ही भवन,
मुझे तो पत्थर बनाती है प्रकृति,
पर तुम बदल देते मेरी सम्पूर्ण आकृति
देकर ईश्वर का दर्जा मुझे
पूजती तुम्हारी संस्कृति ।

कहीं पर राम कही पर श्याम
तुमने मुझमें दर्शाया है,
मेरे ही हिस्सों से तुमने
चारों धाम बनाया है।

औजारों से कट कर खुद मैं
बनता हूँ औजार
मंदिर, मस्जिद गिरजा
सबका बनता मैं आधार
नींव बनकर ईमारतों का
उठा लेता हूँ भार
सेतु बनकर राम लखन को
कराया सागर पार।

बांध बनकर रोका है मैंने
कितनी ही चंचल नदियों को
कोणार्क हम्पी जैसे ही कितना
सहेजा है मैंने सदियों को
मैं पत्थर हूँ इसलिए चुप रहता हूँ,
मै पत्थर हूँ इसलिए सब सहता हूँ।

➢ रेनू शर्मा
कार्यालय सहायक(वि एंव प्रशा)

हिन्दी का दर्द

मेरे जख्मों को खुद समझो, जुबानी क्या कहूँ अपनी
मैं अपनों की सताई कहूँ, कहानी क्या कहूँ अपनी
मैं हिन्दी कहूँ मुझे सब हिन्दुस्तानी भूल बैठे हैं
शिलालेखों में बस मिलती निशानी, क्या कहूँ अपनी कहानी
मेरे जख्मों को खुद समझो, जुबानी क्या कहूँ अपनी।

जो गाते थे निराला भी सुरीले तान में मुझको
जहां तुलसी गुप्त ने भी रंग डाले थे इस तरंग में खुद को
यही एक दौर है, जब मैं विरानी क्या कहूँ अपनी
मेरे जख्मों को खुद समझो, जुबानी क्या कहूँ अपनी।

लगाये लोग है मेले, जैसे प्रदेश में आई कहूँ
लगे अपने से मिलकर भी, के कोई चीज पराई कहूँ
मेरे जख्मों को खुद समझो, जुबानी क्या कहूँ अपनी।

जो वाणी शुद्व हिन्दी है तो हँस देते है सारे
हो अंग्रेजी का नंगा नाच तो थिरकेगें प्यारे
यही एक दौर है जग में, विराणी क्या कहूँ अपनी
मेरे जख्मों को खुद समझो, जुबानी क्या कहूँ अपनी।।

➢ राहुल चराया
सी.ए.

भाषा तुम

व्यक्ति की पहचान हो तुम
हमारे अस्तित्व की शान हो तुम।

कभी अभिधा, कभी लक्षणा तो कभी
व्यंजना के स्वरूप का प्रतिबिम्ब हो तुम।

कभी अर्थ तो कभी अनर्थ का परिचालक हो तुम
जीव को सभी मायाओं का आधार तुमसे ही तो है।

व्यक्ति के अन्य प्राणियों की भांति ही है
किन्तु आपके कारण ही ब्रह्मांड जगत में
विजय पताका फहरा रहे है हम सभी
व्यक्ति की सबसे बड़ी निधि हो तुम।

हमारे अस्तित्व की शान हो तुम
भाषा हो तुम।।

➢ गुलशन अरोड़ा
निजी सहायक (वि. एंव प्रशा.)

भारत में ग्रामीण जीवन

''मूंदी आंखों से दूर जब से वो शहर आया है ना जाने क्यों हर साल उसे अपना गांव धुंधला सा नजर आया है।

प्रस्तावना : भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है। गांव के अधिकतर लोग धरती पर खेती करके अपनी आजीविका चलाते हैं वे प्रतिदिन प्रातः काल जल्दी उठकर खेतों में चले जाते हैं और अंधेरा होने तक दिन भर कड़ी धूप, सर्दी या वर्षा की परवाह किए बिना खुले में कड़ी मेहनत करते हैं। हल चलाने, खेतों की मिट्टी ठीक करने, बीज बोने, खरपतवार हटाने, सिंचाई करने और फसल काटने में ही उनका अधिकांश समय लग जाता है।

सरल और सीधा सादा जीवन : भारत के ग्रामीण लोग सीधा–साधा जीवन बिताते हैं। वे आमतौर पर कच्चे मकानों में रहते हैं, जिन पर खपरैल और फूंस की छतें होती हैं। उनमें अच्छी हवा आने–जाने के लिए खिड़कियों और रोशनदान प्रायः नहीं होते। किसान खुले अैर शुद्ध वायु में सांस लेते हैं और सादा भोजन खाते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है, और वे बलवान होते हैं उनके परिवार कर्मठता और आपसी सहयोग का बड़ा सुन्दर उदाहरण पेश करते हैं। ग्रामीण महिलायें घर का काम करने के अलावा अपने पतियों की खेती के कामों में भी मदद करती है।

ग्रामीण जीवन की बुराईयां : ग्रामीण जीवन की सबसे बड़ा अभिशाप वहीं व्याप्त निरक्षता है। पढ़े लिखे ना होने के कारण वे चालाक लोगों के कहने में आसानी से आ जाते हैं और अपना नुकसान कर बैठते हैं। वे उनके रूढ़ियों के शिकार रहते हैं। उनमें बाल–विवाह की प्रथा व्यापक रूप से फैली हुई है, जिसके कारण उनमें सामाजिक बुराइयां पैदा होती हैं। ग्रामीणों के बीच विवाह, जन्म मृत्यु जैसे सामाजिक अवसरों पर अपनी सामर्थ्य से बढ़कर खर्च करने की प्रथा है। इसके कारण वे कर्ज के बोझ से दबे रहते हैं । गांवों में छोटी–छोटी बातों को लेकर अक्सर लड़ाई झगड़े होते हैं और जरा–जरा सी बात पर लाठियां निकाल लेते हैं। भूमि संबंधी झगड़ों में लम्बी कार्रवाई चलती है, जिसमें उनकी पूरी उम्रभर की कमाई का एक बड़ा हिस्सा बरबाद हो जाता है। बहुत से लोग अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए भी नहीं भेजते विशेषकर लड़कियों को नहीं पढ़ाते।

उपसंहार : गांवों के लोग प्राकृतिक वातावरण में रहने से स्वस्थ तो होते हैं, पर उनके पास धन का अभाव होता है। वे बलवान तो होते हैं लेकिन उनमें सभ्यता और सहनशीलता की बड़ी कमी होती है। वे बड़े सीधे सरल और भोले भाले होते हैं। अक्सर वे रूढ़िवादी और अंधविश्वासी होते हैं। वे रीति रिवाजों और परम्पराओं पर जान छिड़कते हैं। उनमें जात–पात का विचार कूट–कूट कर भरा हुआ है। उनमें शिक्षा का प्रसार करके उनकी सभी बुराईयों को आसानी से दूर किया जा सकता है और ऐसा होने पर ग्रामीण जीवन स्वर्ग के समान बन जाएगा।

''बनाकर घरौंदे मिट्टी के
खेलते पेड़ की छाँव में
बचपन मेरा महक रहा है
आज भी मेरे गाँव में..........

➢ **दीपांकर कुमरा**
कार्यकारी सहायक

दादाजी के सपने

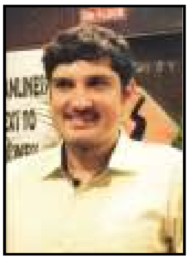

दादा जी को शान्त और धीमी चाल से चलते हुए देख कर कृष्णा ने पूछा, ''दादा जी आज आप बहुत धीरे से चल रहे हैं। आपके हाथ पैर भी ढंग से कुछ काम नहीं कर रहे शायद। ''हाँ बेटा, तू सही कह रहा है। आज मैं तेरे साथ स्कूल नहीं आ रहा था। मेरी तबीयत भी कुछ ठीक नहीं थी, पर तुझे स्कूल तो पहुँचाना था।'' दादा जी ने कुछ लड़खड़ाते हुए जवाब दिया।''दादा जी, ये मम्मी भी खूब हैं। रोजाना आपको ही मुझे स्कूल पहुँचाने भेज देती हैं। कभी पापा जी को या खुद को भी आना चाहिए। आज आपकी तबीयत ठीक नहीं थी, तो कोई और आ जाता मेरे साथ।'' कृष्णा ने बड़ी सरलता से अपनी बात कही।

''क्या करूं बेटे? मैंने तो तुम्हारी मम्मी से कहा था, पर उन्होंने कह दिया कृष्णा का स्कूल कोई बहुत दूर नहीं, कॉलोनी के भीतर ही तो है। अभी कुछ देर में पहुँचा आयेंगे। तब दिनभर आराम कर लीजिएगा।'' दादा जी ने दबी जुबान से मन की भड़ास निकाली। अभी दादा जी और कृष्णा आपस में बात करते जा रहे थे। तभी कृष्णा का स्कूल आ गया। कृष्णा बोला, ''दादा जी, अब आप जाइए। पर थोड़ा स्कूल में बैठकर आराम कर लीजिए। थक गए होंगे।'' कृष्णा अपना बस्ता टाँगे स्कूल कैंपस में दाखिल हो गया। दादा बलवीर सिंह सेना से सेवानिवृत्त हवलदार थे। आज 80 वर्ष के लगभग उम्र हो रही थी। पत्नी अमनजीत का निधन हुए भी लगभग 10 वर्ष गुजर चुके थे। किसी तरह से एक तंग कमरे में जिंदगी गुजर रही थी। किसी तरह बलवीर सिंह धीरे–धीरे कृष्णा के स्कूल से चलकर घर वापिस आ गए। बेटे मंजीत सिंह की पत्नी ज्योति ने झट से कहा, ''देखा पापा जी, थोड़ा स्कूल तक घूम आए तो अच्छा रहा। अब नाश्ता कर लीजिए। मैंने आपके लिए परांठे और चाय बना दी है।''बलबीर सिंह को आज थकान और हल्का सा बुखार था। मन तो नहीं था कि नाश्ता किया जाए पर अब बहू ज्योति कह रही है तो नाश्ता करना ही पड़ेगा। नहीं तो पूरे दिन उसका लेक्चर सुनना पड़ेगा, ''मैंने तो पापा जी के लिए सुबह ही नाश्ता बना दिया था। पर खुद नाश्ता करते नहीं और कहते हैं, मैं उन्हें समय पर चाय व नाश्ता भी नहीं देती। बेटे मंजीत सिंह से भी ढेरों शिकायतें करने बैठ जाएंगे।'' दादा बलवीर सिंह वहीं मंजी पर बैठकर नाश्ता करने लगे। फिर अपने कमरे में आकर लेट गए। चारपाई पर लेटे–लेटे वे अपने पुराने दिनों की याद में खो गए। वैसे उनकी पत्नी अमनजीत उनका ध्यान रखती थी। कितना लजीज खाना बनाती थी। हर चीज समय पर आँखों के सामने हाजिर कर देती थी और आज उसके जाने के बाद बहुत कुछ खत्म सा हो गया। जिस बेटे को मैं और अमन आँखों से एक मिनट ओझल नहीं होने देते थे। आज वही बेटा दस–दस दिनों तक बाप से बात तक नहीं करता। यह भी नहीं सोचता कि पापा जी से पूछ ले पापा जी, आपको कोई चीज तो नहीं लानी? या आज आप क्या खाएंगे? अपनी पसंद की चीज बता दो। मैंने तो इसे इतने लाड़ प्यार में रखा, हर ख्वाहिश मिनटों में पूरी कर दी। आज वही बेटा, मेहमानों जैसा गैरों की तरह व्यवहार करता है। आज मेरे सारे सपने टूट चुके हैं। अभी दादा जी अपने विचारों में खोए हुए थे। तभी जोर से आवाज आई, ''पापा जी, बारह बज चुके हैं। कृष्णा को स्कूल लेने नहीं जाना? ये तो आफिस चले गए हैं। जल्दी से स्कूल चले जाइए, छुट्टी साढ़े बारह बजे हो जाएगी।'' मंजीत सिंह की पत्नी ज्योति ने पापा जी को हुक्म सुना दिया। अब उसके आदेश का पालन दादा जी को करना बहुत जरूरी था।

बुखार और हाथ पैरों में दर्द के बावजूद बेचारे दादा जी, कृष्णाा को छुट्टी के बाद में घर लाने के लिए चल दिए। अभी घर से निकले ही थे कि पड़ोस में रहने वाले प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बलवीर सिंह की हालत देखी। उन्हें लगा आज बलवीर सिंह कुछ अलग से दिख रहे हैं। उन्होंने बलवीर सिंह से कहा, ''पापा जी, आप ठीक तो हैं? आज लग रहा है, आपकी तबीयत कुछ गड़बड़ है।'' कुछ नहीं श्रीवास्तव जी, अपने नाती को लेने स्कूल जा रहा था। अब कुछ काम–धाम तो है

नहीं इसलिए बहू बेटे ने एक काम सौंप दिया है वही करता रहता हूँ।'' बलवीर सिंह ने मन की पीड़ा कह डाली।''चलिए, मैं आपको स्कूल तक पहुँचा देता हूँ। आप मेरे स्कूटर पर बैठ जाइए।'' प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बलवीर सिंह से अनुरोध किया। किसी तरह बलवीर सिंह को प्रोफेसर श्रीवास्तव ने कृष्णा को स्कूल तक छोड़ दिया। कृष्णा को लेकर दादा जी घर वापस आ गए थे। आते ही वे चक्कर खाकर गिर पड़े, सिर में भी चोट लग गई। बहू ज्योति अपनी सहेली सुखवंत के साथ गप्प बाजी कर रही थी। कृष्णा से जब उसे मालूम हुआ तो वह दादा जी के पास आई और बड़बड़ाते हुए बोली, ''जब बनता ही नहीं तो इस उम्र में इधर उधर क्यों घूमते रहते हैं? घर में बैठकर आराम क्यों नहीं करते?'' ''पर मम्मी जी, आपने ही तो दादा जी को दो–दो बार मेरे स्कूल भेजा। आज उन्हें बुखार भी था। तभी तो उन्हें चक्कर आ गया।'' कृष्णा ने तेज आवाज में मम्मी की बात का जवाब दिया। कृष्णा ने फोन करके अपने पापा मंजीत सिंह को बुला लिया। मंजीत ने जब पापा जी के सिर में खून निकलते देखा तो उसने पापा जी को तुरन्त कार में बिठाया और अस्पताल की तरफ चल दिया। उसकी पत्नी ज्योति कहती रही, ''अभी डिटोल से चोट साफ करके पट्टी बाँध देंगे। आप चिन्ता क्यों कर रहे हो?'' पर मंजीत समझ गया था। उसके पापा को यह हार्ट अटैक था। जिसके कारण वे जमीन पर गिर पड़े थे। डॉक्टरों ने इलाज के बाद बताया कि उसके पिता को यह हल्का हार्टअटैक था। किसी तरह उनके प्राण बच सके कृष्णा दादा जी के सिरहाने बैठकर उन्हें एकटक निहार रहा था कि किसी तरह मेरे दादा जी ठीक होकर घर आ जाएँ। बहुत दिनों से उनसे कोई कहानी भी नहीं सुनी है। पर दादा जी एकदम खामोश जैसे बिस्तर पर पड़े हुए थे। शायद वे सोच रहे थे कि अब अस्पताल से वापिस घर लौटेंगे भी या नहीं। अब किसके लिए लौटना है। जितना लिखा था मुकद्दर में उतना हम जी लिए। बेटे–बहू पर भी तो अब बोझ हूँ। एक हस्ती ही क्या है सिर्फ नौकर जैसी बस! हाँ मेरा पोता ही मेरा है। कहा भी गया है, मूल से ब्याज ज्यादा प्रिय होता है। पर मैंने जो सपने सँजोए थे बेटे के लिए, वे तो सब बिखर गए हैं। अब क्या बचा है।

➢ **लवली सूदन**

कार्यकारी सहायक(वि एवं प्रशा)

सुनहरी मोमबती स्टेंड

एक बार एक बुद्धिमान बूढा पादरी अपनी कुर्सी पर बैठकर एक किताब पढ़ रहा था। अचानक दरवाजा खुला और एक अजनबी ने कमरे में प्रवेश किया। बिशप ने उस व्यक्ति से शांति से पूछा, "मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं मित्र"। अजनबी ने तेज़ आवाज में उत्त्तर दिया "ईधर देखो! मेरा नाम जॉन है और मैं 30 साल तक जेल में रहा हूं मुझे बहुत भूख लगी है, मेरे पास पिछले 10 दिनों से खाने के लिए कुछ भी नहीं है, मैंने आपके कुत्ते के घर में सोने की कोशिश की लेकिन उसने मुझे काट खाया। कृपया मेरी मदद करें। "बिशप ने उसका बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें खाने की मेज पर बैठने के लिए कहा अपनी बहन मरिया को चांदी के बरतनों में भोजन परोसने के आदेश दिया। लेकिन मारिया अपने घर में इस बिन बुलाए अतिथि के साथ बिल्कुल सहज नहीं थी और उसने अपने भाई से पूछा की चांदी के बरतनों मे क्यूं सिर्फ एक कागज़ में भोजन परोस कर यहां से भगा देते है। लेकिन बिशप ने उसे बताया की वह अजनबी उसका मित्र है और उसको भोजन अतिथि की तरह ही परोसा जाएगा। जैसे ही भोजन परोसा गया जॉन इस प्रकार खाने लगा जैसे कि उसने अपने पूरे जीवन में कभी भी भोजन नहीं करा हो, उसके लंबे और गंदे नाखूनों के साथ वह रोटी के टुकड़े कर रहा था और शराब ऐसे पी रहा था जैसे वह उसके जीवन की अंतिम शराब हो। जब रात का खाना खत्म हो गया तो बिशप ने उसे स्नान करने के लिए कहा और फिर एक नाई को बुलवाकर जॉन के बाल कटवाए ओर दाड़ी बनवाई और फिर उसे सोने के लिए एक कमरा दिया। अगली सुबह जब बिशप उठ गया तो जॉन अपने कमरे में नहीं था और उसकी बहन ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रही थी और पुलिस उसके घर में थी जब उसने पूछा कि क्या हुआ तो उसकी बहन ने उसे बताया था कि जॉन सभी चांदी के बरतन और सुनहरी मोमबत्तियों का स्टैंड चुरा कर भाग गया है। अचानक एक और पुलिस अधिकारी जॉन के साथ कमरे में प्रवेश करता है, जॉन उसकी हिरासत में था। उन्होंने बिशप से सभी बरतन और मोमबती का स्टैंड दिखाकर पूछा कि "क्या यह सामान आपका है" बिशप ने जवाब दिया "हाँ, लेकिन इस व्यक्ति को गिरफ्तार करने की कोई ज़रुरत नहीं है, मैने यह सब ले जाने कि अनुमति इसे स्वयं दी है"। बिशप से जवाब को सुनने के बाद पुलिस ने जॉन को छोड़ दिया और वापस चली गयी। आखिरकार जॉन ने अपनी गलती को महसूस किया और बिशप को अपनी कहानी सुनाई।

"मेरा भी कभी एक परिवार था जिसमें मेरी पत्नी थी और दो बच्चे थे, लेकिन मैंने कभी उनकी परवाह नहीं की । मैं बहुत शराब पीता था और अपनी पत्नी को मारता था यहां तक कि मैंने तो अपने बच्चों तक को बेचने की कोशिश की ताकि शराब के लिए धन एकत्रित हो सके। यही कारण है कि मेरी पत्नी मुझसे तंग हो गयी और उसने मुझे छोड़ दिया, वह हमारे बच्चों को भी अपने साथ ले गई। जब वह चली गई तो मुझे मेरे जीवन में उसके मूल्य का एहसास हुआ। यहीं से मेरा दुर्भाग्य शुरू हुआ कि मुझे कोई नौकरी नहीं मिली, मैं बेघर हो गया और यहां तक कि एक दिन आया जब मुझे एक रोटी चोरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह मेरा दुर्भाग्या था क्योंकि दुकानदार ने मुझे रंगे हाथ पकड लिया और मुझे पुलिस को सौंप दिया, मुझे 30 साल की जेल मिली, उन्होंने मेरे साथ जानवर से भी बदतर व्यवहार किया, मुझे बहुत कम खाना दिया, इसलिए मैंने जेल से भागने का फैसला किया और फिर मेरी मुलाकात आप से हुई मैंने अपने पूरे जीवन में आपसे ज़्यादा सभ्य व्यक्ति नहीं देखा, लेकिन मुझे फिर एक विचार आया कि अगर मैं आपके घर से उन सभी कीमती बरतनो को चुरा लूँगा और उन्हें अपनी

पत्नी को दे दूंगा तो वह मुझे फिर से स्वीकार कर लेगी लेकिन मैं गलत था क्योंकि उसने फिर से शादी कर ली थी और इन सभी वर्षों के बाद मैं अपने बच्चों से मुझे पहचानने की उम्मीद नहीं कर सकता क्योंकि 30 साल वास्तव में एक लंबा अंतराल है। और आज मैंने इसे फिर से दोहराया है, कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए। "पूरी कहानी सुनने के बाद बिशप ने जवाब दिया कि आपका अतीत आपके वर्तमान का वर्णन नहीं कर सकता, तुम्हारे में बहुत बदलाव आया है और तुम्हें गलती का एहसास है जो कि सबसे महत्वपूर्ण बात है यह कहने के बाद बिशप ने उन्हें सुनहरी मोमबत्तियों का एक सेट सौंप दिया ताकि वह एक नया जीवन फिर से शुरू कर सके जॉन ने उसे धन्यवाद दिया और एक नया जीवन आरंभ किया।

“इस कहानी को बताने का मेरा उद्देश्य यह है कि हर किसी को जीवन में दूसरा मौका चाहिए क्योंकि हर किसी के पास बदलने की क्षमता होती है”।

➢ **शुभम शर्मा**

निजी सहायक (तकनीकी)

धरती का द्वन्द

भोर के उजाले में जो खेत कभी चमकते व लहलहाते थे और पक्षियों की चहचहाहट से गूंज़ा करते थे। आज वही खेत बंजर बनकर बारिश की एक बूंद के लिए तरस रहे थे। उन्ही खेतों से कुछ ही दूरी पर एक पेड़ की छाया में कुछ लोग बैठे हुए थे, जिनके मायूस चेहरों पर चिन्ता की लकीरें नजर आ रहीं थीं। उनमें से एक शख्स गम्भीर स्वर में कहता है —"अगर कुछ दिन बारिश नहीं हुई तो मेरी सारी फसल खराब हो जाएगी। सोचा था इस साल अच्छी फसल होगी तो सारा उधार चुका दूंगा परन्तु ...."दूसरा शख्स धीमे स्वर में कहता है – "भाई यह हाल तुम्हारा ही नहीं अपितु हम सबका है।" तभी उनमें से एक शख्स गुस्से में कहता है - "इन सबका कारण वो लोग हैं जो पर्यावरण के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। प्रदूषण के कारण वायुमंडल में परिवर्तन हो रहा है जिसके कारण बारिश समय पर नहीं हो रही तथा कभी कम व कभी अधिक मात्रा में हो रही है।" "इसका मतलब करे कोई और भरे कोई।" "हाँ भाई भुगतान तो हम सब किसान कर रहे हैं।"उन किसानों में से एक जिसका नाम गोपाल था, चुपचाप औरों की बातें सुन रहा था। गोपाल कुछ कहने की सोच ही रहा था कि तभी सामने से एक शख्स दौड़ते हुए उनके पास हाँफते हुआ आता है और कहता है - "भोला ने फांसी लगा ली।" यह सुनकर सब भौंचक्के हो जाते हैं और दौड़ते हुए भोला के घर पहुँचते हैं। वहाँ मातम पसरा हुआ था। चारों तरफ रोने की आवाजें सुनाई दे रही थी। भोला की पत्नी व मासूम बच्चों का रो-रो कर बुरा हाल था। गोपाल से यह सब देखा न गया और वह परिवार को सांत्वना दे कर घर लौट आया। घर पहुंचने पर गोपाल की पत्नी ने उसे बताया कि सेठ के लोग आए थे और चेतावनी दे गए कि अगर जल्द से जल्द पैसे नही लौटाये तो .....।पत्नी पूरी बात बताये बिना रुक गई। यह सुन गोपाल धीमे स्वर से पत्नी से पूछता है –"तो सेठ क्या करेंगे?" "कह रहे थे कि हमारी जमीन अपने नाम कर लेंगे।""अगर जमीन छिन गई तो न जाने क्या होगा। दो महीने बाद हमारी बिटिया की शादी है। बिना पैसों के शादी कैसे करेंगे।"साड़ी से आँसू पोंछते हुए पत्नी पूछती है – "अब हम क्या करें?"गोपाल बिना कुछ कहे बाहर निकल जाता है। खुले आसमान के नीचे तारों के बीच जमीन पर खाट बिछाए आकाश की ओर टकटकी लगाए गोपाल लेटा सोच रहा था कि इन परेशानियों का क्या हल है। वह कैसे इन सब से मुक्ति पाए। दिन भर की सारी बातें उसके दिमाग में घूमने लगीं। य़ह सोचते-2 भोला का चेहरा बार-2 गोपाल की आंखों के सामने आने लगा। लोगों की बातें, पत्नी के सवाल कानों में गूंज़ने लगे। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसका दिमाग फट जाएगा। अचानक उसके मन में यह विचार आया कि अब एक ही उपाय है कि भोला की तरह इन सब परेशानियों से मुक्त हो जाऊं। गोपाल आत्महत्या करने का निश्चय करता है। अगली सुबह पत्नी व बच्चों को खेत भेज कर वह स्वयं घर पर रुक जाता है। उनके जाते ही गोपाल एक रस्सी लाता है और उसे पंखे पर लटका देता है। फिर एक लक़डी की कुर्सी लाता है और उसमे चढ़ कर रस्सी का फंदा अपने गले में डाल कर धीरेधीरे आंखें बंद कर देता है। आंखें -

बंद करते ही उसका दिल जोरों से धड़कने लगा है, बेचैनी बढ़ने लगी है। हाथ पाँव कांपने लगे और न जाने कितने विचार उसके दिमाग में घूमने लगा तथा कितने भाव मन में उमड़ने लगे। उसके कानों में अंतरात्मा की आवाज गूंजने लगी ।अंतरात्मा - ये क्या कर रहा है तू? गोपाल - आत्महत्या । अंतरात्मा - ये क्यों कर रहा है तू? गोपाल - मैं भी और किसानों की तरह आत्महत्या कर सारी परेशानियों से मुक्त हो जाना चाहता हूं। अंतरात्मा - कभी सोचा है कि तेरे जाने के बाद क्या होगा? गोपाल - नहीं। अंतरात्मा - सेठ तेरी जमीन व घर छीन लेंगे, तेरी पत्नी व बच्चे दरकी शादी भी कैसे होगी दर की ठोकरें खाएंगे। तेरी बेटी-, वो कुँवारी रह जाएगी। तू सबको इन हालातों में अकेला छोड़ देना चाहता है। यह सुनकर गोपाल अपनी आंखें खोल देता है। सोचता है कि आत्महत्या कर स्वयं तो परेशानियों से मुक्त हो जाऊंगा पर मेरे परिवार का क्या होगा। नहीं मैं उन्हे अकेला नहीं छोड़ सकता। मैं अकेला मुक्त नहीं होऊंगा अपितु सारे परिवार को भी मुक्त कर दूंगा। ऐसा विचार कर गोपाल फंदे को गले से उतार कर नीचे उतर जाता है। थोड़ी ही देर में पत्नी व बच्चे खेत से लौट आते हैं। गोपाल पत्नी से कहता है - “आज मैंने तुम सब के लिए खाना बनाया है। जल्दी से तुम सब आ जाओ। आज हम सब मिल कर खाना खाऐंगे।” यह सब सुन कर पत्नी आश्चर्य प्रकट करते हुए कहती है कि यह सब करने की क्या जरूरत थी। पत्नी सबको खाना परोसती है। सबसे पहले सबसे छोटा बेटा निवाला मुहं में डालता है। फिर सब मिल बांट कर खाना खाने लगते हैं। पर कुछ ही समय बाद नजारा बदल जाता है। सबसे छोटा बेटा चिल्लाने लगता है कि उसके पेट में जोरों का दर्द हो रहा है। कुछ ही क्षणों में उसके मुहँ से झाग निकलने लगता है। मां उसके पास जाती ही है कि दूसरा बेटा व बेटी भी चीखने लगते हैं व उनके मुहं से भी झाग निकलने लगता है। इससे पहले कि मां कुछ कर पाती वह भी जमीन पर गिर जाती है। सब तड़पने लगते हैं। घर चीखों से गूंजने लगता है। कुछ ही समय बाद घर मौन हो जाता है। अचानक गोपाल को झटका सा लगता है व वह कल्पना से बाहर निकलता है। देखता है कि उसके बीवी और बच्चे उसके सामने बैठे हुए हैं। उसकी पत्नी सबको खाना परोस रही है। खाना परोसने के पश्चात माँ बच्चों से कहती है - ”आज खाना तुम्हारे बाबा ने बनाया है।” यह सुन सब खुश हो जाते है और जल्दी जल्दी खाने के लिए हाथ बढ़ाते है। यह देख गोपाल की आँखों के सामने वही मंजर नज़र आने लगता है जो उसने कल्पना में देखा था। वह घबरा जाता है। उसकी रूह कांपने लगती है। वह अपने बच्चों और पत्नी को तड़पते हुए नहीं देख सकता था। वह तुरंत उठता है और अपने बच्चों के हाथ से निवाला फेक देता है और ज़ोर से चिल्लाते हुए कहता है - “इस खाने को कोई मत खाना मेंने इसमें जहर मिलाया है।” यह सुन सब चौंक जाते हैं। पत्नी हैरानी से गोपाल की और देखती है किन्तु उससे कोई सवाल नहीं पूछती है। यह सब देख गोपाल चुपचाप बाहर निकल जाता है। ग्लानि, दुख, चिंता, रोष आदि कितने ही एहसास उसके दिल में उमड़ने लगते है। उसका अशांत मन बार बार उससे सवाल करने लगता है। उसके, दिल, दिमाग व मन में जंग सी छिड़ जाती है। अंतरात्मा - तुम यह क्या कर रहे थे। अपने बीवी और बच्चों को मारना चाहते थे।

गोपाल - हाँ, किन्तु मैं तो इतना कायर हूँ की न तो मैं खुद को मार सका और न ही अपने बीबी बच्चों को।अंतरात्मा - नहीं, तुम कायर नहीं हो। कायर तो वो लोग होते हैं जो आत्महत्या करते है। तुम अपने बीवी और बच्चों को नहीं मार सके यह भी कायरता नहीं, अपितु ऐसा न करके तुमने अपने प्रेम और कर्तव्यबोध को ही दर्शाया है। तुम्हें क्या लगता है कि भोला तथा अन्य आत्महत्या करने वालों ने सही किया? गोपाल थोड़ा सोचते हुए कहता है - “नहीं” अंतरात्मा - सही कह रहे हो। उन्होने अत्महत्या करते वक़्त अपने परिवार के बारें में नहीं सोचा। वे केवल परिस्थितियों तथा कर्तव्यों से भागना चाहते थे। उनकी पत्नियाँ भी चाहतीं तो उनके जाने के बाद वो भी आत्महत्या कर लेतीं किन्तु उन्होने मौत न अपनाकर कर्म को अपनाया और विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए अपना कर्म कर रही है।

गोपाल मन ही मन सोचता है - “इसका मतलब मेंने जो कुछ भी किया वो ठीक किया।” अंतरात्मा - हाँ, तुमने जो कुछ भी किया वो ठीक किया। ईश्वर ने हमें यहाँ कर्म करने के लिए भेजा है। जीवन रूपी तराज़ू में सुख दुख दोनों ही समान रूप से होते है। अपितु हम सुख को तो भोग लेते हैं किन्तु दुख से भागने की कोशिश करते है। तुम्हारे जीवन में भी कुछ वक़्त सुख, शांति, खुशी, आनंद का आया होगा तुमने कुछ अच्छा वक़्त बिताया होगा। गोपल स्मरण करते हुए कहता है - हाँ, जब मेरी शादी हुई थी, मेरे बच्चे हुए थे और जब मेरी बेटी का रिश्ता पक्का हुआ था तब मैं बहुत खुश था। अंतरात्मा - किन्तु यह अब उस सुख के बाद आने वाले इस दुख की विषम परिस्तिथियां भी ज्यादा वक़्त के लिए नहीं रहेंगी। अपितु इस दुख के बाद सुख भी अवश्य आयेगा। यही जीवन चक्र है। किन्तु उसके लिए तुम्हें सब्र तथा धैर्य से इस परिस्थितियों का सामना करना होगा। गोपाल चलते चलते रुक जाता है। उसके दिल, दिमाग और मन में जो तूफान मचा हुआ था वह धीरे धीरे शांत होने लगता है जैसे उसे अपने सारे सवालों के जवाब मिल चुके हों। वह घर की ओर निकल पड़ता है। घर पहुँचते पहुँचते उसे रात हो जाती है। घर पहुँचने पर वह बिना किसी से कुछ कहे जाकर सो जाता है और भोर होते ही उठकर खेतों की ओर निकल पड़ता है। खेत पहुचते ही गोपाल बड़ी मेहनत तथा लगन से खेती में लग जाता है। इस उम्मीद के साथ कि बहुत जल्द दुख के बादल छँट जाएंगे और सुख की किरणों से उसके जीवन में फिर से उजाला छा जाएगा।

- **प्राची गुसांई**

कार्यकारी सहायक (पी-।।।)

''किसान''

जो देता है खुशहाली, जिसके दम से है हरियाली,
आज वही बर्बाद खड़ा है, देखो उसकी बदहाली,
बहुत बुरी हालत है, ईश्वर धरती के भगवान की,
टूटी माला जैसे, बिखरी किस्मत आज के किसान की,

ऐसी आंधी चली कि घर का तिनका–तिनका बिखर गया
आखिर धरती मां से उसका प्यारा बेटा बिछड़ गया,
अखबारों की रद्दी बनकर बिकी कथा बलिदान की,
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की,

एक अरब 25 करोड़ की भूख जो रोज मिटाता,
कह नहीं पाता वो किसी को जब भूखा सो जाता,
फिर सीने पर गोली खाता सरकार सम्मान की,
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की,

देख कलेजा फट जाता है आखों से आँसू बहते,
ऐसा न हो कलम रो पड़े सच्चाई कहते–कहते,
बाली तक गिरवी रखी है बेटी के अभिमान की,
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की।

➢ रोहित कुमार
निजी सहायक (तकनीकी)

प्यार के दो मीठे बोल

मेरा जन्म एक गरीब परिवार में हुआ। बचपन से ही मैंने कई दुख देखे। जब होश संभाला तब से ही काम करना शुरू कर दिया । मैं बहुत पढ़ना चाहता था परन्तु केवल 10वीं कक्षा तक ही पढ़ पाया क्योंकि मेरे घर की ऐसी स्थिति सही नहीं थी कि मैं अपनी आगे की पढ़ाई पूरी कर पाता। कभी मैंने राशन की दुकान में काम किया कभी चाय की दुकान में। चाय की दुकान में चाय पिलाते—पिलाते मुझे एक आदमी ने नौकरी का प्रस्ताव दिया । उस नौकरी से मिलने वाला वेतन चाय की दुकान पर काम करने से मिलने वाले वेतन से बहुत ज्यादा था। वो नौकरी बर्फ खाने की थी जहॉं और भी कई लोग काम करते थे वहाँ इतने बड़े—बड़े एयर कंडीशनर लगे थे कि वहाँ काम करना बड़ा मुश्किल था और जहाँ बर्फ जमाई जाती थी वहाँ तो तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कभी कम होता था पर मुझे इससे कोई शिकायत नहीं थी । एक दिन काम करते करते इस बात का ध्यान नहीं रहा कि कब पूरा दिन बीत गया और फैक्टरी बंद होने का समय हो गया। धीरे —धीरे सभी कर्मचारी वापस चले गए। मैं काम में इतना व्यस्त हो गया था मुझे समय का पता ही नहीं चला और मैं जब वहाँ से जाने लगा तो तब तक अन्दर के सारे दरवाजे बंद हो चुके थे और मैं वही उस एयर—कंडीशनर वाले कमरे में बंद हो गया। उस कमरे में इतनी ठंड थी कि कोई भी व्यक्ति कुछ समय बाद ठंड के कारण अपने प्राण त्याग दे। मैंने वहाँ से बाहर आने की बहुत कोशिश की लेकिन मेरी सारी कोशिश नाकामयाब रही जिसके कारण मैं बहुत निराश हो गया। निराश होकर मैं उस कमरे के एक कोने में सर पकड़ कर बैठ गया फिर मैं सोचने लगा की अब मुझे भगवान ही बचा सकते हैं और मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा जैसे—जैसे समय बीत रहा था वैसे वैसे मेरा भगवान से विश्वास भी हट रहा था और अब मेरी हालत धीरे—धीरे खराब होने लगी और मुझे लगने लगा कि ठंड के कारण कभी भी मेरी मृत्यु हो सकती है लेकिन तभी मुझे एक आवाज आई और जब मैंने नजर उठाकर देखा तो दरवाजे पर चौकीदार चाचा खड़े थे। बस मुझे इतना ही याद था क्योंकि उसके बाद मैं ठंड के कारण बेहोश हो गया। मेरे बेहोश होने पर चौकीदार चाचा ने मुझ पर कम्बल डाल दिया और मुझे उधर से बाहर निकाल लाएं। थोड़ी देर में गरमी मिलने के कारण मुझे होश आया तो मैंने चौकीदार चाचा से कहा की चाचा आप तो मेरे लिए एक भगवान के भेजे हुए फरिश्ते बन कर आए, लेकिन आपको कैसे पता चला कि मैं यहाँ अंदर फँस गया हूँ । मेरी बात सुनकर चाचा ने कहा कि बेटा जब तुम सुबह काम पर आते हो तो सबसे पहले मुझे नमस्कार चाचा कहते हो और जब काम से वापस जाते हो तो भी यह बोल कर जाते हो कि अच्छा चाचा राम राम चलता हूँ। तुम्हारे यही दो

बोल अच्छे लगते हैं। और मुझे इनके सुनने की आदत हो गई है। आज तक मुझसे इतनी इज्जत और सम्मान से कोई बात नहीं करता सिर्फ तुम ही हो जो मुझसे इतनी इज्जत से बात करते हो यही वजह है की आज मैं तुम्हारी जान बचा पाया हूँ। मैंने चाचा से पूछा कैसे ? तो उन्होने जवाब दिया कि हर रोज की तरह जब आज सुबह तुम आए थे तो तुमने मुझे नमस्कार चाचा बोला था लेकिन शाम को जाने के समय मैंने तुम्हारी आवाज राम राम चाचा या नमस्कार चाचा नहीं सुनी और तुम्हे जाते हुए नहीं देखा मुझे यह बात थोडी अटपटी सी लगी। मैं एक बार अंदर यह देखने आ गया की अंदर कोई बंद तो नहीं हैं जब मैं अंदर आया तब मुझे एयर कंडीशनर रूम से कुछ आवाज आती सुनाई दी और जब मैं यहां आया तो मेरा शक यकीन में बदल गया और मैं तुम्हारी जान बचा पाया। उनकी इस बात को सुनकर मेरी आँखे भर आई और मैने उन्हें गले लगा लिया। जाते–जाते चाचा मुझे लम्बी उम्र का आशीर्वाद देते हुए चले गये।

अतः यह कहानी हमें सिखाती है कि हमें सब व्यक्तियों से इज्जत से बात करनी चाहिए। चाहे वो कोई भी हो या वह कोई भी पद पर काम करता हो सब से विनम्र होकर तमीज से बात करनी चाहिए क्योंकि क्या पता आपके वही दो मीठे बोल आपके काम आ जाएं व आपकी जान बचा ले।

➢ **संजय चौहान**
संदेश वाहक

एक प्यारी सी सुबह

गरम गरम लड्डू सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह–सुबह रख आया कौन
इसे आसमान की थाली में।

मूंदी आंख खोली कलियों ने
चिड़ियों ने गाया गाना
गुन–गुन करते भवरों ने
खिलते फूलों को पहचाना।

तभी आ गई फुदक –फुदक कर
एक तितलियों की टोली
मधुमक्खियों ने मधु रस लेकर
भर डाली अपनी झोली।

उठो–उठो लगो काम पर
तब आगे बढ़ पाएंगे
वे क्या पाएंगे जीवन में
जो सोते रह जाएंगे।

➢ **मनोज सिंह बिष्ट**
ऑफिस बॉय

ईश्वरीय सेवा का फल

एक बार एक महात्मा जी, वन में भगवत् चिंतन के लिए जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति मिला वह अत्यंत गरीब था, उसने महात्मा जी को रोक लिया और उनसे कहा कि महात्माजी आप परमात्मा को जानते हैं, उनसे बातें करते हैं, यदि आपको परमात्मा मिले तो उनसे कहना कि मुझे सारी उम्र जितनी दौलत प्राप्त होने वाली है वह सारी की सारी एक मुश्त ही मिल जाए। उससे मैं अपने जीवन के कुछ दिन तो चैन से बिता सकूंगा। फिर महात्मा जी ने उसे समझाया कि मैं तुम्हारी दुख भरी कहानी परमात्मा को सुनाऊँगा लेकिन जरा तुम भी सोचो यदि भाग्य की सारी दौलत एक साथ मिल जाएगी तो आगे की जिंदगी कैसे गुजरेगी? मगर वह व्यक्ति अपनी बात पर अडिग रहा फिर महात्मा जी उस व्यक्ति को आशान्वित कर आगे बढ़े। संयोगवश उस व्यक्ति को उन्हीं दिनों ईश्वरीय ज्ञान मिला और उधर महात्मा जी ने उस व्यक्ति के लिए परमात्मा को कहा और कुछ दिन बाद परमात्मा की कृपा से उस व्यक्ति को काफी धन प्राप्त हुआ और जब दौलत मिल गई तो उसने सोचा कि मैंने अब तक गरीबी के दिन काटे हैं और कभी भी ईश्वरीय सेवा नहीं कर पाया अब मुझे सारी दौलत एक साथ ही मिल गई क्यों ना मैं सारी दौलत ईश्वरीय सेवा में लगाऊँ और फिर इसके बाद मुझे दौलत मिले ना मिले । ऐसा सोचकर उसने सारी दौलत ईश्वरीय सेवा में लगा दी। समय गुजरता गया लगभग दो साल के पश्चात् महात्मा जी उधर से गुजरे तो उन्हें उस व्यक्ति की याद आई और सोचा कि वह व्यक्ति अवश्य आर्थिक तंगी में होगा क्योंकि अचानक प्राप्त हुई दौलत को वह संभाल नहीं पाया होगा। यह सब सोचते हुए महात्मा जी उसके घर के सामने आए तो देखा कि उस व्यक्ति की झोपड़ी की जगह सुन्दर महल खड़ा था और जैसे ही महात्मा जी की नजर उस व्यक्ति पर पड़ी तो महात्मा जी उसका वैभव देखकर आश्चर्यचकित हो गए और तब महात्मा जी ने उस व्यक्ति से पूछा कि तुम्हारे भागय की सारी दौलत कैसे बढ़ गई। तब वह व्यक्ति नम्रता से बोला महात्मा जी मुझे जो दौलत मिली थी वह कैसे चन्द दिनों में ही ईश्वरीय सेवा में लगा दी उसके बाद दौलत कहां से आई, यह मैं खुद नहीं जानता यह तो प्रभु का प्रसाद समझकर मैंने ग्रहण कर लिया।

महात्मा जी अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच कर ध्यानस्थ हुए और उन्होंने परमात्मा से पूछा यह सब कैसे हुआ प्रभु तब महात्मा जी को उत्तर मिलाः

''किसी की दबी रहे धूल को, किसी की चोर ले जाए,

धन उसी का सफल होता जो ईश्वर अर्थ लगाए''।

➢ **मो. शाहिद**
स्टेशनरी इंचार्ज

मजदूरों की मजदूरी

आज के मशीनी युग में भी मजदूर का महत्व कम नहीं हुआ है। उद्योग, व्यापार, भवन निर्माण, कृषि, पुल, सड़कों के निर्माण कार्य में मजदूरों का बहुत योगदान है। जैसे कि हमारे भारत वर्ष में कई इमारतें, किलों, व मंदिरों, जैसे बिरला मंदिर, छत्तरपुर मंदिर इत्यादि का निर्माण इन मजदूरों के हाथों से सम्पन्न हुआ है। कई गुरूद्वारों का निर्माण भी इन गरीब मजदूरों के हाथों से शिल्प किया गया। मजदूरों को काम मिलता है तो बदले में न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करता है। उसका जीवन दैनिक मजदूरी पर टिका है। जब तक वह काम करने में सक्षम होते हैं तब तक उनका और परिवार का पालन पोषण होता है। वे पढ़े लिखे नहीं होते पर ऐसे भवन का निर्माण कर देते हैं कि दुनिया उस दृश्य को देखने को लालायित रहती हैं। उदाहरण के लिए छत्तरपुर का मंदिर ही देखो कितने मजूदरों ने कड़ी धूप, बारिश में इस भवन का निर्माण किया। आज इस मंदिर के दर्शन करने रोज लाखों की भीड़ जमा हो जाती है। उनका कहीं नाम ही नहीं है व कोई अपना घर भी नहीं है। जिस दिन मजदूरी ना मिले तो दूसरों पर भी ही निर्भर रहना पड़ता है। भारत के ज्यादातर मजदूरों की यह स्थिति है। ग्रामीण क्षेत्रों के मजदूरों की न केवल आय कम होती है बल्कि रहने के साधन भी नहीं होते । मजदूरों के सराहनीय कार्य इस प्रकार हैं :

ईंट के भट्टों में ईंट बनाते हैं, खेतों में खेती करते हैं, नहरों और झीलों की खुदाई करते हैं। मेहनत से रिक्शा चलाते हैं, सफाई का काम, बढ़ाई का, लोहार का, हस्तशिल्प, दर्जी इत्यादि जैसे मेहनत के बाद मजदूरों को अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए दिन रात करने पड़ते हैं, तब जाकर उसे दो वक्त की रोटी नसीब होती है।

अब बंधुवा मजदूरी की प्रथा समाप्त कर दी गई है। सरकार की ओर से उनके लिए न्यूनतम मजदूरी की घोषणा की जाती है जिसमें समय–समय पर सुधार किया जाता है । अब तो मनरेगा ने रोजगार गारंटी कार्यक्रम के अधीन ग्रामीण क्षेत्रों के मजदूरों के लिए कम से कम सौ दिन के रोजगार या बेरोजगारी भत्ता की व्यवस्था की गई है। इन प्रयासों से मजदूरों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

भारतीय संविधान में श्रमिकों की सहूलियत के लिए कुछ ऐसे प्रावधान रखे गए हैं जिनका उनको पूर्ण लाभ मिला है। उनसे अतिरिक्त काम लेने पर अतिरिक्त भुगतान भी करना पड़ता है। इन सब के बावजूद श्रमिकों के कल्याण की दिशा में अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों के मजदूरों के लिए अभी अनेक कार्य करने है। उन्हें पेंशन तथा कुछ सामाजिक सुरक्षा देने की जरूरत है। मजदूरों के श्रम का सम्मान होना चाहिए। उनकी जीवन दशा में सुधार की प्रक्रिया तेजी से की जानी चाहिए। ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए की उन्हें बारहों महीने पूरा काम मिल सके और अपने घर का पालन पोषण कर सके। राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों को प्रगति के लाभों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

➢ **अनिल कुमार**
प्रेषक

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
15 एनबीसीसी, टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली–110066